हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 4 मई 2025

11 गांव के विकास में होती है ग्रामीणें की भूमिका: डीसी

12 मार्केट कमेटी की व्यवस्थाओं की खुली पोल: सिंधू

खबर संक्षेप

आज मनेगी भगवान परशुराम की जयंती

लोहारू। ब्राह्मण समाज द्वारा श्री ब्राह्मण महासभा के तत्वावधान में स्थानीय ज्ञान कुंज स्कूल में 4 मई को मनाए जाने वाले भगवान परशुराम जन्मोत्सव कार्यक्रम की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। कार्यक्रम में सांसद चौ धर्मबीर सिंह और पूर्व मंत्री रामबिलास शर्मा बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे। डॉ. सुरेश भारद्वाज, सुशील शर्मा और मुकेश शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में युवा गायिका रौनी रमन शामिल होंगे और अपने ओजस्वी गीतों से युवाओं में उत्साह का संचार करेंगी।

कार की टक्कर से बुजुर्ग घायल, मामला दर्ज

लोहारू। दो दिन पहले लोहारू भिवानी मुख्य सड़क मार्ग पर एक कार की टक्कर से घायल हुए बुजुर्ग व्यक्ति की शिकायत पर लोहारू पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। गांव ढाणी लक्ष्मण निवासी करीब 70 वर्षीय आत्माराम ने बताया कि वह किसी गांव से ढिगावा गया हुआ था। लोहारू-भिवानी मुख्य सड़क मार्ग पर वह बिजली बोर्ड की तरफ जा रहा था। इस दौरान एक कार ने पीछे से टक्कर मार दी और चालक मौके से फरार हो गया।

दिखा बर्बादी का मंजर, तूफानी बारिश का किसानों के अरमानों पर चला खंजर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

बीते दिवस तूफानी बारिश तो रूक गई,लेकिन बारिश-तूफान ने जो तबाही मचाई, उसका मंजर अब दिखना शुरु हुआ। किसानों के खेतों में लगी सोलर प्लेट हवा के साथ दूर दूर तक बिखर गई,कई जगहों पर तो सोलर के लिए लगाया गया ढाचा ही पलट गया। हालात ये बने है कि अब जिले में करीब 50 जगहों पर सोलर टयूबवैल से सिंचाई नहीं हो सकती। चूंकि इन टयूबवैलों का ढाचा, प्लेट ही टूट गई। अब किस तरह से सूर्य से बिजली बनाकर पैम्पसेट को चला पाएगी। एकबारगी तो किसानों का सिंचाई का सहारा पूरी तरह से छीन गया। अब इन सोलर टयूबवैलों को दुरुस्त करने के लिए किसानों को हजारों रुपये खर्चने पड़ेंगे। फिलहाल किसानों के समक्ष सिंचाई की बड़ी समस्या आन पड़ी है।

टूटी सोलर प्लेट

विगत में सरकार द्वारा अनेक गांवों के किसानों को सोलर प्लेट व पैम्पसेट अनुदान पर दिए थे। सारा कार्य कम्पनी को ही दिया गया था। मसलन खेत में सोलर प्लेट लगाने , जमीन में बेस बनाने तथा पैम्पसेट आदि लगाकर किसान को दिया गया था। इस दौरान जिस कम्पनी ने सही ढंग से किसानों के खेतों में सोलर प्लेट लगा दी। उन किसानों के खेतों में तो तूफानी बारिश में प्लेट डटी रही,लेकिन जिस कम्पनी के कर्मचारियों(ठेकेदार) ने जमीन में बेस बनाने या सामान हलका लगाने या अन्य कोई अनियमितता बरती है। उन किसानों के खेतों में लगी सोलर प्लेट ढांचे से उखड़कर हवा के साथ उड़कर दूर जा गिरी। गांव घुसकानी के रणबीर व बलराम ने बताया कि उनके खेतों में सोलर की प्लेटे लगी हुई थी। जिनसे टयूबवेल चलाया जाता था,लेकिन शुक्रवार अल सुबह आई तूफानी बारिश ने सोलर प्लटे व पूरे ढांचे को ही तोड़ दिया। प्लेटें भी टूट गई,कई प्लेट तो कई टूकड़ों में भी बट गई। अब वहां पर केवल एक लौहे का पाइप की शेष बचा है। जिससे उनको लाखों रुपये का नुकसान हो गया। उन्होंने जिला प्रशासन से मदद करने की गुहार लगाई है। गांव बडेसरा के किसान अशोक कादियान के खेतों में लगी सोलर प्लेट ही हवा के साथ उड़ गई। दो प्लेटे तो सोलर ढांचे से करीब दो से ढाई किले दूर पानी में पड़ी मिली। बाकी चार प्लेटों का अभी तक कोई अता व पता नहीं चला। जो प्लेट पानी में पड़ी मिली है वे भी पूरी तरह से टूटी हुई है। उनको नुकसान कम्पनी की लापरवाही से लगा है। क्योंकि अगर कम्पनी सही ढंग से प्लटों को सेट करती तो प्लेट हवा के साथ उखड़ती नहीं। फिलहाल सोलर का ढाचा ही नजर आ रहा है।

भिवानी। बवानीखेड़ा में तूफानी बारिश में तबाह हुई सोलर प्लेटों को निकालता किसान और घुसकानी में टूटा सोलर सिस्टम। फोटो : हरिभूमि

■ बडेसरा के किसान अशोक कादियान के खेतों में लगी सोलर प्लेट ही हवा के साथ उड़ गई, दो से ढाई किले दूर मिली

नहीं दर्ज कर रही कम्पनी शिकायत

गांव बडेसरा निवासी अशोक कादियान ने बताया कि जब उन्होंने इस बारे में जिस कम्पनी से सोलर प्लांट लिया था। उस कम्पनी में शिकायत दर्ज करवाना चाहा तो उन्होंने प्लेटों के सीरियल नम्बर मांगने लगे, जबकि जिस वक्त उनके खेत में सोलर प्लेट लगाई गई। उस वक्त उनको यह बताया ही नहीं। अब उनको इस बारे में कोई जानकारी नहीं। प्लेटों के सीरियल नम्बर न देने पर उनकी शिकायत ही दर्ज नहीं की। उन्होंने जिला प्रशासन से उनकी ही नहीं, जिन किसानों के खेतों में लगी सोलर प्लेट डैमेज हुई है। उनको आर्थिक मदद दिलाए जाने की गुहार लगाई।

खेत में बने मकान की उड़ी छत

शुक्रवार सुबह आई तूफानी बारिश से गांव लोहारी जाटू के किसान संदीप के खेत में बने मकान की छत ही टूट कर दूर जा गिरी। गनीमत यह रही कि जिस वक्त छत टूट कर दूर गिरी। उस वक्त परिवार के लोग दूसरे कमरे में थे। अगर उस कमरे में होते तो बड़ा हादसा हो सकता। जिस मकान की छत टूटी है। उसी मकान के बाहरी हिस्से में ट्रैक्टर व पशु भी बंधे हुए थे। अगर उन पर छत टूट कर गिर जाती तो बड़ा नुकसान होता। उन्होंने जिला प्रशासन से आर्थिक मदद की गुहार लगाई है।

भिवानी। तूफानी बारिश से गांव लोहारी जाटू में किसान के खेत में बने मकान की क्षतिग्रस्त छत का दृश्य।

आंधी से उखाड़ी सोलर प्लेटें

भयंकर आंधी-तुफान व बारिश ने लोगों का काफी नुकसान किया है। वहीं दूसरी ओर आई तेज आंधी ने किसानों के अरमानों पर भी पानी फेर दिया। जानकारी अनुसार बवानी खेड़ा के खेड़ी मार्ग पर एक किसान भीम बल्हारा ने अपने खेत में फसलों की सिंचाई के लिए साढ़े सात किलोवाट की सौर ऊर्जा की प्लेटें लगवाई गई थी। जिस पर लाखों रुपए खर्च आया था। गत सुबह अचानक आई तेज आंधी व बरसात ने उन्हें उखाड़ फेंक दिया। किसान भीम बल्हारा ने बताया कि उसने अपनी फसलों की सिंचाई के लिए साढ़े सात किलो वाट की सौर ऊर्जा की प्लेट लगवाई गई थी। जिससे वह सिंचाई करता था, लेकिन क्षेत्र में आई तेज आंधी ने उनको दो से तीन एकड़ दूर उखाड़ फेंक दिया। जिसके चलते उन्हें भारी नुकसान हुआ है। किसान ने बताया कि अचानक आई तेज आंधी के चलते अनेकों किसानों को भारी नुकसान पहुंचा है।

एशियन बॉक्सिंग में अजीत क्लब के मुक्केबाज हर्षिल ने जीता पदक

भिवानी। विजेता बॉक्सर को सम्मानित करते कोच व खिलाड़ी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जोर्डन में 22 अप्रैल से 1 मई तक आयोजित अंडर 15 एशियन बॉक्सिंग चेंपियनशिप में अजीत बाक्सिंग क्लब के मुक्केबाज हर्षिल ने 37 किलोग्राम भारवर्ग में कांस्य पदक जीतकर देश और प्रदेश का नाम रोशन किया है।

कोच नवीन बल्हारा फ्रुटी ने बताया कि इससे पहले भी हर्षिल स्कूल नैशनल गेम्स में स्वर्ण पदक जीतने के साथ साथ प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज भी रहा है। क्लब प्रधान सुरेन्द्र बंटु ने बताया कि हर्षिल के पिता रिंकू भी अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाज रहे हैं और रेलवे में कार्यरत हैं। इस अवसर पर मनजीत अहलावत, अर्जुन बैनीवाल शेरसिंह ग्रेवाल, सरपंच आशीष बैनिवाल, पूर्व पार्षद संदीप भारद्वाज, विकास पंघाल, डॉ. मनफूल ग्रेवाल, मास्टर अजय सुहाग, राजेश बैनीवाल, मोनू वर्मा, ओमबीर बैनीवाल, मनजीत सांगवान फौजी, विकास बैनीवाल, सतवेन्द्र सांगवान, कर्ण सिंह तंवर,चरण सिंह नौरंगाबाद,जितेन्द्र बैनिवाल,राहुल तंवर, धर्मबीर दुहन, लीला निनान अंतरराष्ट्रीय कब्ड्डी खिलाड़ी सोमबीर सिवाच, सतीश सिवाच, भिवानी बॉक्सिंग सचिव शशिकांत, अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाज प्रवीन लीली, संजय लीली आदि खिलाड़ियों व खेलप्रेमियों ने पदक विजेताओं का स्वागत किया।

अवैध पिस्तौल व कारतूस बरामद, युवक गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

स्पेशल स्टाफ पुलिस ने शुक्रवार को अवैध पिस्तौल सहित युवक को काबू किया है। आरोपी की पहचान बिगोवा निवासी अमन के रूप में हुई है। पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। आरोपी को कोर्ट में पेश कर रिमांड पर लिया। पुलिस प्रवक्ता योगेश कुमार ने बताया कि शुक्रवार को सीआईए

स्टाफ के हेड कांस्टेबल ओमबीर टीम के साथ समसपुर चौक मौजूद थे। उस दौरान सूचना मिली कि लोहरवाड़ा गांव के खेतों के रास्ते युवक अवैध पिस्तौल लेकर दादरी झज्जर रोड पर आ रहा है। सूचना के बाद सीआईए टीम ने समसपुर नहर के समीप नाकाबंदी कर दी। कुछ देर बाद युवक पहुंचा। जिसकी तलाशी ली गई तो एक पिस्तौल व कारतूस बरामद हुआ। युवक की पहचान बिगोवा निवासी अमन अमन के रूप में हुई। अमन से बरामद देशी पिस्तौल व कारतूस को कब्जे में लिया।

आयुष चिकित्सकों को सम्मानित किया

डॉ. सुनील को आयुष प्रतिभा पुरस्कार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

भिवानी। डॉ. सुनील को आयुष प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित करते अतिथि।

भारत के प्राचीन चिकित्सा विज्ञान आयुष को विश्व मंच पर एक नई पहचान दिलाने के उद्देश्य से आयोजित इंटरनेशनल आयुष कॉन्क्लेव-2025 का भव्य आयोजन आगरा में किया। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का संचालन सिविक सर्विसेस ने किया, जिसमें देश और विदेश से डेढ़ सौ से अधिक आयुष चिकित्सकों को सम्मानित किया।

सम्मेलन केवल एक आयोजन नहीं बल्कि एक आंदोलन था, जहां चिकित्सा, शिक्षा, शोध और राष्ट्रनिर्माण की बातें हुई। इस भव्य आयोजन में आयुष क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले हरियाणा से एकमात्र डॉ. सुनील सनसनवाल को आयुष प्रतिभा पुरस्कार से नवाजा गया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने मंच पर डॉ. सुनील सनसनवाल को उनके पिछले दस सालों के आयुर्वेद क्षेत्र में दिए योगदान के लिए उनको आयुष प्रतिभा पुरस्कार से नवाजा व शुभकामनाएं दी।

इस दौरान डॉ. संदीप चावला और ऋषि कपूर ने रोगों की जड़ तक पहुंचने वाले आयुष आधारित उपचार को सरल शब्दों में प्रस्तुत किया। इस दौरान हरिद्वार यूनिवर्सिटी के कुलपति धर्मवीर ने आयुष को शिक्षा जगत से जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया, उनकी बातें प्रेरणादायक थी और उन्होंने बताया कि भारत को आयुष के जरिए विश्व गुरु बनने से कोई रोक नहीं सकता। इंटरनेशनल आयुष कांक्लेव 2025 में यह स्पष्ट कर दिया कि आयुष अब केवल विकल्प नहीं बल्कि भविष्य का समाधान है। यह मंच केवल डॉक्टरों के लिए नहीं बल्कि पूरे मानव समाज के लिए आशा की एक नई किरण बनकर उभरा, जब चिकित्सा में संस्कृत जुड़ती है तब समाधान केवल इलाज नहीं बल्कि जीवन शैली बन जाती है।

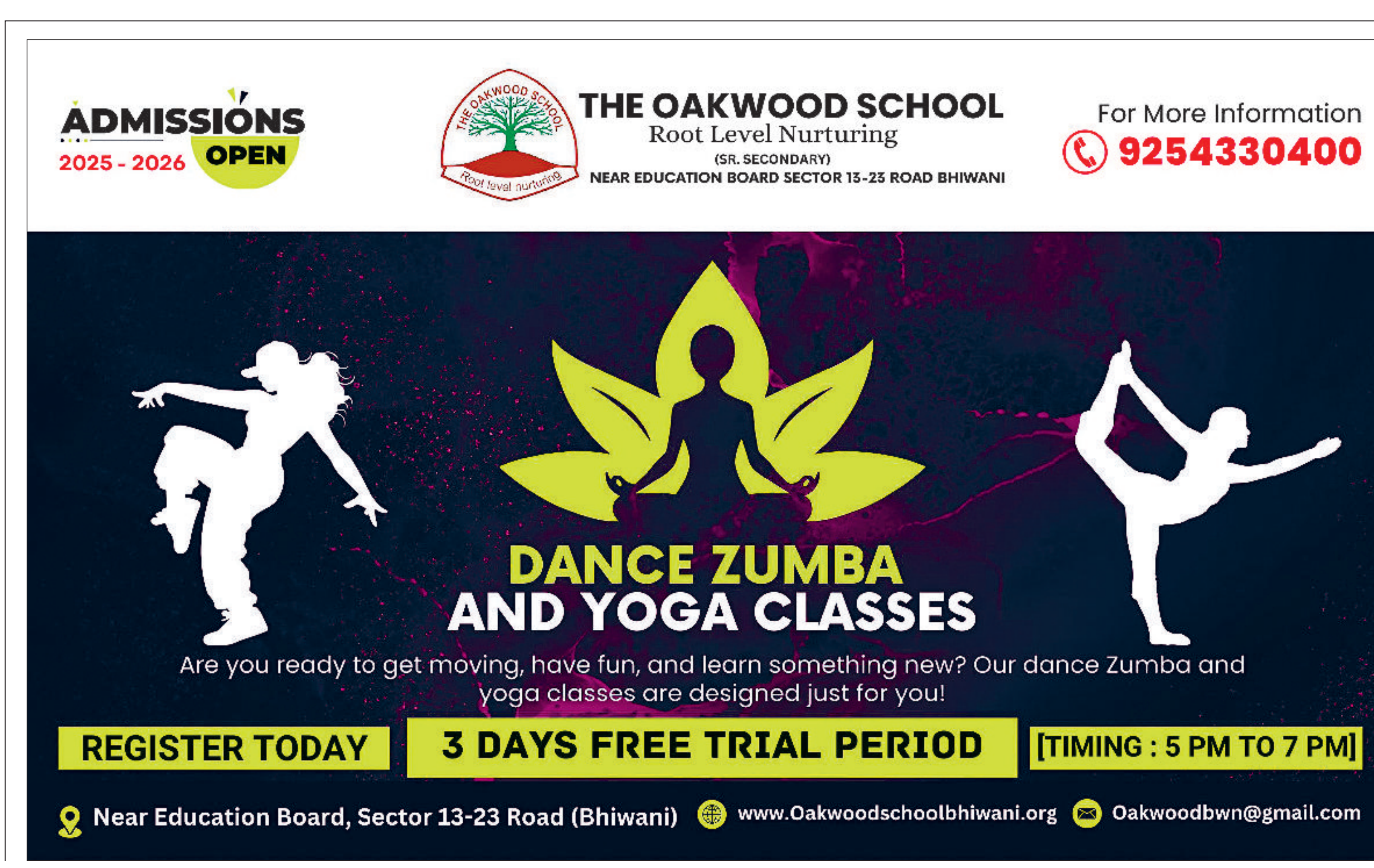

अगर ज्यादा कट गया है टैक्स तो घबराएं नहीं, पूरा पैसा होगा वापस

एक्सपर्ट बोले, टीडीएस कटने के बाद भी आसानी से वापस पा सकते पैसे ■ गलत कैलकुलेशन या नियमों की जानकारी न होने से कट जाता है पैसा ■ ज्यादा कटे हुए टैक्स का रिफंड क्लेम कर सकते हैं आप ■ फॉर्म 26एएस की मदद से लगा सकते हैं पता

कर की बात
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी आईटीआर जमा करवाते हैं और आपका पैसा ज्यादा कट गया है तो घबराएं नहीं, यह सारा पैसा आपको वापस मिल सकता है। बस आपको थोड़ा संयम के साथ कुछ नियमों का पालन करना होगा। टीडीएस यानी टैक्स डिडक्टेड एट सोर्स, एक ऐसा टैक्स है जो आपकी कमाई पर स्रोत पर ही काट लिया जाता है। चाहे आपकी सैलरी हो, फिक्स्ड डिपॉजिट का ब्याज हो, किराए की आय हो या प्रोफेशनल फीस, इन सब पर टीडीएस कट सकता है। लेकिन कई बार गलत कैलकुलेशन या नियमों की जानकारी न होने की वजह से जरूरत से ज्यादा टीडीएस कट जाता है। अगर आपके साथ भी ऐसा हुआ है, तो घबराने की जरूरत नहीं। आप न सिर्फ ये चेक कर सकते हैं कि कितना टीडीएस कटा, बल्कि ज्यादा कटे हुए टैक्स का रिफंड भी क्लेम कर सकते हैं।

टीडीएस क्या होता है : सबसे पहले समझते हैं कि टीडीएस है क्या। मान लीजिए आप किसी कंपनी में काम करते हैं और आपकी सैलरी 50,000 रुपये महीना है। कंपनी आपको पूरी सैलरी देने से पहले उसमें से कुछ टैक्स काट लेती है और उसे सरकार के पास जमा कर देती है। यही टीडीएस है। ये टैक्स आपकी कमाई के हिसाब से और सरकार के टैक्स स्लैब के आधार पर कटता है। सैलरी के अलावा, बैंक में फिक्स्ड डिपॉजिट के ब्याज पर, किराए की आय पर, या फ्रीलांस काम की फीस पर भी टीडीएस कट सकता है। लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि आपकी कुल आय टैक्सेबल लिमिट से कम होती है, फिर भी टीडीएस कट जाता है। या फिर गलत टैक्स स्लैब के हिसाब से ज्यादा टैक्स काट लिया जाता है। ऐसे में आप ज्यादा कटे हुए टैक्स को रिफंड के तौर पर वापस पा सकते हैं। इसके लिए आपको पहले चेक करना होगा कि कितना टीडीएस कटा और क्या वो सही था।

ज्यादा टीडीएस कटने का पता कैसे लगाएं

टैक्स और इनवेस्टमेंट एक्सपर्ट बताते हैं, अगर आपको लगता है कि आपका टीडीएस जरूरत से ज्यादा कट गया है, तो सबसे पहले आपको अपना टैक्स डिटेल्स चेक करनी होंगी। इसके लिए फॉर्म 26एएस आपको मदद कर सकता है।'

कैसे चेक करें

सबसे पहले फॉर्म 26एएस डाउनलोड करें। फॉर्म 26एएस एक तरह का टैक्स स्टेटमेंट है, जिसमें आपके पूरे साल के टीडीएस की पूरी जानकारी होती है। ये इनकम टैक्स डिपार्टमेंट की वेबसाइट पर मिलता है। इसे चेक करने के लिए इनकम टैक्स की ऑफिशियल वेबसाइट **www.incometax.gov.in** पर जाएं। अगर आपने पहले रजिस्टर नहीं किया है, तो 'रजिस्टर यूअरसेल्फ' पर क्लिक करके अपना पैन नंबर, नाम, जन्मतिथि और दूसरी डिटेल्स डालकर रजिस्टर करें। रजिस्ट्रेशन के बाद, अपना पैन नंबर (जो यूजर आईडी होता है) और पासवर्ड से लॉगिन करें। लॉगिन करने के बाद 'व्यू टैक्स क्रेडिट स्टेटमेंट (फॉर्म 26एएस)' का ऑप्शन चुनें। आपको एक नई वेबसाइट टीआरएसीईएस पर ले जाया जाएगा। यहां से आप फॉर्म 26एएस डाउनलोड कर सकते हैं। इस फॉर्म में आपको सारी डिटेल्स मिलेंगी, जैसे कितना टीडीएस कटा है, किसने काटा (जैसे आपका एम्प्लॉयर या बैंक), और वो टैक्स सरकार के पास जमा हुआ या नहीं। फॉर्म 16 या टीडीएस सर्टिफिकेट से मिलान करें

एम्प्लॉयर आपको फॉर्म 16 देता है

अगर आप नौकरीपेशा हैं, तो आपका एम्प्लॉयर आपको फॉर्म 16 देता है। ये एक ऐसा डॉक्यूमेंट है, जिसमें आपकी सैलरी और उस पर कटे टीडीएस की पूरी जानकारी होती है। अगर आपने फ्रीलांसिंग की है या किराए की आय है, तो आपको टीडीएस सर्टिफिकेट मिलता है। इन डॉक्यूमेंट्स में दी गई टीडीएस की रकम को फॉर्म 26एएस से मिलाएं। अगर कोई गड़बड़ी दिखे, जैसे फॉर्म 26एएस में ज्यादा टीडीएस दिख रहा हो, तो ये ज्यादा कटने का सबूत है।

टैक्सेबल इनकम का हिसाब लगाएं

अब आपको अपनी कुल आय और टैक्स स्लैब का हिसाब लगाना होगा। मान लीजिए आपकी सालाना आय 7 लाख रुपये से कम है, तो न्यू टैक्स रिजीम में आपको कोई टैक्स नहीं देना पड़ेगा। लेकिन अगर आपका टीडीएस कट गया है, तो वो पूरा रकम रिफंड के लिए क्लेम की जा सकती है। इसके लिए आप अपने चार्टर्ड अकाउंटेंट की मदद ले सकते हैं या ऑनलाइन टैक्स कैलकुलेटर का इस्तेमाल कर सकते हैं। यहां बताते चलें कि इस साल के बजट में न्यू टैक्स रिजीम में सालाना आय की लिमिट 12 लाख रुपये सालाना कर दी गई है।

टीडीएस का रिफंड कैसे क्लेम करें?

जैन कहते हैं, "अगर आपको पक्का पता चल गया है कि आपका टीडीएस ज्यादा कट गया है, तो अब बात आती है रिफंड क्लेम करने की। इसके लिए आपको इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) फाइल करना होगा।" आइए, इसे स्टेप-बाय-स्टेप समझते हैं।

समय पर आईटीआर फाइल करें

जितनी जल्दी आप आईटीआर फाइल करेंगे, उतनी जल्दी आपका रिफंड प्रोसेस शुरू होगा। आमतौर पर आईटीआर फाइल करने की आखिरी तारीख 31 जुलाई होती है, लेकिन अगर आप ये डेडलाइन मिस कर देते हैं, तो भी आप लेट फीस के साथ रिटर्न फाइल कर सकते हैं। आईटीआर फाइल करते समय सही आईटीआर फॉर्म चुनें। अगर आप सैलरीड हैं, तो आईटीआर-1 या आईटीआर-2 काम करेगा। अगर बिजनेस या प्रोफेशनल इनकम है, तो आईटीआर-3 या आईटीआर-4 चुनें। फॉर्म 26एएस और फॉर्म 16 की डिटेल्स के आधार पर अपनी आय और टीडीएस की जानकारी सही-सही भरें। अगर आपने टैक्स बचाने के लिए कोई इन्वेस्टमेंट किया है (जैसे पीपीएफ, ईएलएसएस, या इंश्योरेंस), तो उसकी डिटेल्स भी डालें।

रिफंड की डिटेल्स सही भरें

आईटीआर फॉर्म में एक सेक्शन होता है, जहां आपको अपने बैंक अकाउंट की डिटेल्स देनी होती हैं, जैसे अकाउंट नंबर और आईएफएससी कोड। ये इसलिए जरूरी है क्योंकि आपका रिफंड सीधे आपके बैंक अकाउंट में आएगा। सुनिश्चित करें कि ये डिटेल्स बिल्कुल सही हों, वरना रिफंड में देरी हो सकती है।

आईटीआर को वेरीफाई करें

आईटीआर फाइल करने के बाद उसे वेरीफाई करना जरूरी है। आप इसे ऑनलाइन आधार ओटीपी के जरिए, डिजिटल सिग्नेचर से, या आईटीआर-V फॉर्म को प्रिंट करके इनकम टैक्स डिपार्टमेंट को भेजकर वेरीफाई कर सकते हैं। वेरिफिकेशन के बिना आपका रिफंड प्रोसेस शुरू नहीं होगा।

रिफंड का स्टेटस कैसे चेक करें?

आईटीआर फाइल करने के बाद आप अपने रिफंड का स्टेटस चेक कर सकते हैं। इसके लिए इनकम टैक्स की वेबसाइट पर लॉगिन करें। 'व्यू रिटर्न/फॉर्म्स' ऑप्शन पर क्लिक करें। अपने फाइनेंशियल ईयर और आईटीआर फॉर्म का स्टेटस चुनें।

यह मिलेगी जानकारी

यहां आपको पता चलेगा कि आपका रिफंड प्रोसेस हो रहा है, अप्रूव हो गया है, या किसी वजह से रिजेक्ट हुआ है। अगर रिफंड में देरी हो रही है, तो आप इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के हेल्पलाइन नंबर पर कॉल कर सकते हैं या ऑनलाइन फाइल कर सकते हैं।

रिफंड में देरी होने पर क्या करें?

कई बार रिफंड प्रोसेस में 6 महीने तक का समय लग सकता है। अगर आपको लगता है कि देरी हो रही है, तो सबसे पहले चेक करें कि आपका आईटीआर सही तरीके से फाइल और वेरीफाई हुआ है या नहीं। अगर कोई गलती हुई है, तो आप रिवाइज्ड आईटीआर फाइल कर सकते हैं। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट से संपर्क करें और अपना पैन डिटेल्स देकर रिफंड स्टेटस के बारे में पूछें। अगर डिपार्टमेंट की तरफ से देरी होती है, तो आपको 6% सालाना की दर से ब्याज भी मिल सकता है।'

टीडीएस कटने से कैसे बचें?

बलवंत जैन कहते हैं, "अगर आपकी आय टैक्सेबल लिमिट से कम है, तो आप टीडीएस कटने से बच सकते हैं। इसके लिए फॉर्म 15जी (अगर आप 60 साल से कम उम्र के हैं) या फॉर्म 15एच (60 साल से ज्यादा उम्र के लिए) अपने बैंक या एम्प्लॉयर को जमा करें। ये फॉर्म बताते हैं कि आपकी आय टैक्सेबल नहीं है, इसलिए टीडीएस नहीं काटा जाए। अपने एम्प्लॉयर को अपनी इन्वेस्टमेंट डिटेल्स (जैसे पीपीएफ, इंश्योरेंस) समय पर दें, ताकि वो सही टैक्स कैलकुलेट करें। वे आगे कहते हैं, इन स्टेप्स को फॉलो करके आप न सिर्फ ज्यादा टीडीएस कटने की समस्या को पकड़ सकते हैं, बल्कि रिफंड भी आसानी से क्लेम कर सकते हैं। बस जरूरी है कि आप सही जानकारी के साथ समय पर कदम उठाएं।

टैक्स के लिए कौन सी रिजीम बेहतर

1. पुरानी टैक्स रिजीम

पुरानी टैक्स रिजीम में आप विभिन्न कटौतियों और छूटों का लाभ उठा सकते हैं, जैसे कि धारा 80सी के तहत कटौती, धारा 80डी के तहत स्वास्थ्य बीमा कटौती, आदि।

2. नई टैक्स रिजीम

नई टैक्स रिजीम में टैक्स दरें कम हैं, लेकिन अधिकांश कटौतियों और छूटों को हटा दिया गया है।

इन कारकों पर निर्भर

1. आपकी आय

यदि आपकी आय अधिक है और आप विभिन्न कटौतियों और छूटों का लाभ उठा सकते हैं, तो पुरानी टैक्स रिजीम आपके लिए बेहतर हो सकती है।

2. आपके निवेश

यदि आप विभिन्न निवेश विकल्पों में निवेश करते हैं जो टैक्स कटौती के लिए योग्य हैं, तो पुरानी टैक्स रिजीम आपके लिए बेहतर हो सकती है।

3. आपकी आवश्यकताएं

यदि आप एक सरल और कम टैक्स दर वाली रिजीम चाहते हैं, तो नई टैक्स रिजीम आपके लिए बेहतर हो सकती है।

विशेषज्ञ से परामर्श लें

यह अनुशंसा की जाती है कि आप अपनी व्यक्तिगत वित्तीय स्थिति और आवश्यकताओं का मूल्यांकन करें और एक टैक्स विशेषज्ञ से परामर्श लें ताकि आप अपने लिए सबसे अच्छी टैक्स रिजीम का चयन कर सकें।

इन इक्विटी फंड्स ने एक साल में 29 फीसदी तक रिटर्न दिया

पिछले एक साल के दौरान शेयर बाजार में काफी उथल-पुथल का माहौल देखने को मिला। इस माहौल की वजह से इक्विटी में पैसे लगाने वाले निवेशकों में काफी बेचैनी भी रही है। फिर चाहे वे इक्विटी में सीधे निवेश करने वाले इनवेस्टर हों या इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में पैसे लगाने वाले छोटे निवेशक, लेकिन इस उथल-पुथल के बीच भी इक्विटी म्यूचुअल फंड्स की हर कैटेगरी की कुछ स्कीम्स ने पिछले 1 साल में आकर्षक रिटर्न दिए हैं। इन कैटेगरी टॉपर स्कीम्स के डायरेक्ट प्लान्स का पिछले एक साल का रिटर्न 12% से लेकर 29% तक रहा है। इससे पता चलता है कि इन म्यूचुअल फंड स्कीम्स के मैनेजर्स की निवेश रणनीति बाजार की हलचलों के बीच भी निवेशकों को मुनाफा दिलाने में सफल रही है। निवेशक भी इन फंडों में निवेश कर खुद को खुशनसीब मान रहे हैं। चूंकि जब बाजार में गिरावट का दौर था तब ये फंड अच्छा मुनाफा दे रहे थे।

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

ज्यादा मुनाफा देने वाला टॉप इक्विटी फंड/1 साल का रिटर्न

- मोतीलाल ओसवाल लार्ज कैप फंड : 23.59% (रेगुलर), 25.29% (डायरेक्ट)
- इनवेस्को इंडिया लार्ज एंड मिड कैप फंड : 14.79% (रेगुलर), 16.13% (डायरेक्ट)
- एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड : 14.87% (रेगुलर), 15.63% (डायरेक्ट)
- एसबीआई मल्टीकैप फंड : 13.43% (रेगुलर), 14.36 % (डायरेक्ट)
- इनवेस्को इंडिया मिड कैप फंड : 16.43% (रेगुलर), 17.86% (डायरेक्ट)
- बंधन स्मॉल कैप फंड : 12.99% (रेगुलर), 14.52% (डायरेक्ट)
- यूटीआई वैल्यू फंड : 12.78% (रेगुलर), 13.56% (डायरेक्ट)
- व्हाइटओक कैपिटल ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड : 13.13% (रेगुलर), 15 % (डायरेक्ट)
- इनवेस्को इंडिया कॉन्ट्रा फंड : 11.86% (रेगुलर), 13.11% (डायरेक्ट)
- यूटीआई डिविडेंड यील्ड फंड : 11.80% (रेगुलर), 12.48% (डायरेक्ट)
- एचडीएफसी फोकस्ड 30 फंड : 15.25% (रेगुलर), 16.52% (डायरेक्ट)
- एचडीएफसीफार्मा एंड हेल्थकेयर फंड (कैटेगरी : थीमैटिक/सेक्टोरल फंड) : 28.13% (रेगुलर), 29.69% (डायरेक्ट)

एक साल में बेस्ट रिटर्न देने वाले टॉप इक्विटी फंड : एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएफएफआई) के पोर्टल पर तमाम इक्विटी फंड्स को 12 सब कैटेगरी में बांटकर दिखाया गया है। हमने यहां इनमें से हर कैटेगरी में पिछले 1 साल के दौरान सबसे ज्यादा मुनाफा देने वाली स्कीम के रेगुलर और डायरेक्ट प्लान के रिटर्न के आंकड़े दिए हैं। इन योजनाओं में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड, मोतीलाल ओसवाल म्यूचुअल फंड और इनवेस्को इंडिया से लेकर यूटीआई म्यूचुअल फंड तक कई दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं। जिन्होंने निवेशकों को खूब लुभाया और अच्छा रिटर्न देकर मालामाल कर दिया। जिसने भी इन फंडों में निवेश किया, उसने ही अच्छा मुनाफा कमाया और अपनी रकम को कई गुना बढ़ा लिया।

लार्ज कैप और सेक्टोरल फंड रहे आगे

अपनी-अपनी कैटेगरी में टॉप करने वाले फंड्स के एक साल के रिटर्न को ध्यान से देखने पर पता चलता है कि इस लिस्ट में एचडीएफसी फार्मा एंड हेल्थकेयर फंड के डायरेक्ट प्लान ने सबसे ज्यादा 29.69% रिटर्न दिया है. जबकि 25.29% रिटर्न के साथ मोतीलाल ओसवाल लार्ज कैप फंड का डायरेक्ट प्लान दूसरे नंबर पर है. दिलचस्प बात यह है कि कैटेगरी में टॉप करने वाले इस लार्ज कैप फंड का 1 साल का मुनाफा स्मॉल कैप फंड कैटेगरी की टॉपर स्कीम, बंधन स्मॉल कैप फंड से काफी अधिक है, जिसके डायरेक्ट प्लान का 1 साल का रिटर्न 14.52% है. मिड कैप फंड कैटेगरी की टॉपर स्कीम, इनवेस्को इंडिया मिड कैप फंड के डायरेक्ट प्लान का रिटर्न भी 17.86% ही है. यानी उथल-पुथल भरे बाजार में टॉप लार्ज कैप फंड ने इन दोनों से बेहतर रिटर्न दिया है.

पिछले रिटर्न के जारी रहने की गारंटी नहीं

हमने एएमएफआई के पोर्टल पर मौजूद रिटर्न के जो आंकड़े लिए हैं, वे 25 अप्रैल 2025 अपडेटेड

हैं. इन पर पिछले कुछ दिनों के दौरान शेयर बाजार में हुई रिकवरी का असर भी नजर आ रहा है. आपको बता दें कि पिछले 1 महीने के दौरान निफ्टी 50 (निफ्टी 50) इंडेक्स करीब 5% बढ़ा है, जबकि मौजूदा कैलेंडर इयर (2025) के दौरान अब तक (वाईटीडी) इस इंडेक्स में करीब 2.5% की बढ़त दिखी है. वहीं पिछले 1 साल में यह करीब 7.5% ऊपर आया है. हमने ऊपर जो जानकारी दी है, उनका मकसद सिर्फ कुछ दिलचस्प आंकड़े पेश करना है. यहां यह याद रखना जरूरी है कि इक्विटी म्यूचुअल फंड के पिछले रिटर्न के भविष्य में जारी रहने की कोई गारंटी नहीं होती और उनमें निवेश के साथ मार्केट रिस्क हमेशा जुड़ा रहता है. यही वजह है कि अधिकांश इक्विटी म्यूचुअल फंड्स को रिस्कोमीटर पर बहुत ज्यादा जोखिम वी की रेटिंग दी जाती है।

क्या है इक्विटी फंड्स

इक्विटी फंड्स एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो इक्विटी शेयरों में निवेश करता है। इक्विटी फंड्स का उद्देश्य लंबी अवधि में पूंजी वृद्धि करना होता है और यह निवेशकों को शेयर बाजार में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है। इसकी विशेषताएं हैं। इक्विटी फंड्स इक्विटी शेयरों में निवेश करते हैं जो विभिन्न कंपनियों के शेयर होते हैं। इक्विटी फंड्स लंबी अवधि के लिए निवेश करने के लिए उपयुक्त होते हैं। इक्विटी फंड्स में जोखिम होता है क्योंकि शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव हो सकता है।

कुछ मुख्य फायदे

1. **पूंजी वृद्धि:** इक्विटी फंड्स लंबी अवधि में पूंजी वृद्धि करने में मदद कर सकते हैं।
2. **विविधीकरण:** इक्विटी फंड्स विभिन्न शेयरों में निवेश करते हैं जिससे जोखिम कम होता है।
3. **पेशेवर प्रबंधन:** इक्विटी फंड्स का प्रबंधन पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा किया जाता है।

इक्विटी फंड्स के प्रकार

1. **लार्ज-कैप फंड्स:** लार्ज-कैप फंड्स बड़ी कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं।
2. **मिड-कैप फंड्स:** मिड-कैप फंड्स मध्यम आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं।
3. स्मॉल-कैप फंड्स: स्मॉल-कैप फंड्स छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं।

(डिस्क्लेमर इक्विटी फंड्स में निवेश करने से पहले, यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने निवेश लक्ष्यों और जोखिम सहनशीलता को समझें और अपने निवेश विकल्पों का चयन करें।)

पीएफ ट्रांसफर और विड्रॉल करना अब बेहद आसान, ईपीएफओ ने कर दिया सिस्टम अपग्रेड

बिजनेस डेस्क

कर्मचारियों के लिए एक बेहद सूकून भरी बात है। दरअसल, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने पेंशन निकासी से जुड़ी प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए कई नए बदलावों की घोषणा की। इन बदलावों का उद्देश्य क्लेम की प्रक्रिया को तेज करना और कागजी काम को कम करना है। कुछ डिजिटल और पेपरलेस उपायों से न केवल समय बचेगा, बल्कि क्लेम रिजेक्शन की संभावना भी बेहद कम होगी। ईपीएफओ सदस्य थोड़ी सावधानी के साथ आसानी से अपने क्लेम को हासिल कर सकेंगे। दावों के निपटानों में भी तेजी आएगी।

जानिए क्या-क्या बदला गया है

- घर की मरम्मत करवाने के लिए एडवांस : अब कर्मचारी खुद ही डिक्लेरेशन देकर पैराग्राफ 68बी(7) के तहत घर में कुछ काम करवाने के लिए या मरम्मत करने के लिए एडवांस ले सकेंगे।
- बैंक अकाउंट लिंक करना हुआ आसान : अब बैंक खाते को यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (यूएएन) से जोड़ने के लिए न तो नियोक्ता की मंजूरी चाहिए और न ही बैंक दस्तावेज़ अपलोड करने की जरूरत है।
- चेहरे की पहचान से यूएएन एक्टिवेशन : अब उमंग ऐप के जरिए फेस ऑथेंटिकेशन से भी यूएएन को एक्टिव किया जा सकता है।
- फॉर्म 13 में बदलाव : ईपीएफओ ने ट्रांसफर क्लेम प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए फॉर्म 13 को नया रूप दिया है।
- पेंशनर्स के लिए डिअरनेस रिलीफ में संशोधन: पेंशनभोगियों के लिए महंगाई राहत दरों को भी संशोधित किया गया है।
- ईपीएफओ का कहना है कि इन डिजिटल और पेपरलेस उपायों से न केवल समय बचेगा, बल्कि क्लेम रिजेक्शन की संभावना भी कम होगी।
- सेल्फ डिक्लरेशन से घर सुधार के लिए पीएफ निकालना आसान

अब चेक या पासबुक की कॉपी अपलोड करने की जरूरत नहीं

ईपीएफओ के नए सर्कुलर से पीएफ क्लेम की प्रक्रिया और भी आसान हो गई है। अब खाते से जुड़ी जानकारी के लिए चेक लीफ या पासबुक की फोटो अपलोड करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसके अलावा, बैंक अकाउंट लिंक कराने के लिए नियोक्ता (एम्प्लॉयर) की मंजूरी भी जरूरी नहीं रह गई है।

अब सदस्य बैंक खाता लिंक कर सकेंगे

इस बदलाव से कमजोर क्वालिटी की फोटो या गलत दस्तावेज अपलोड होने की वजह से जो क्लेम रिजेक्ट होते थे, उनकी संख्या काफी कम होगी। साथ ही, सदस्यों को ज्यादा तेज़ और सुविधाजनक अनुभव मिलेगा। ईपीएफओ ने अपने सॉफ्टवेयर सिस्टम को अपग्रेड किया है, जिससे अब पीएफ निकालने के दावों की जांच और मंजूरी की प्रक्रिया अपने आप हो जाएगी। पहले जहां दावों को निपटाने में 10 से 15 वर्किंग डेज लगते थे, अब यह समय घटकर एक हफ्ते से भी कम हो सकता है।
"नए सिस्टम में दावों की प्रोसेसिंग काफी तेजी से होगी, जिससे उनका निपटारा भी जल्दी किया जा सकेगा।"

उमंग ऐप से पीएफ सेवा और भी सुरक्षित

- उमंग ऐप में अब आधार से जुड़ी फेस ऑथेंटिकेशन सुविधा शुरू कर दी गई है। यह फीचर 8 अप्रैल से लागू हुआ है और इसका मकसद पीएफ से जुड़ी सेवाओं को और सुरक्षित बनाना है।
- शुरुआत में यह सुविधा यूएएन एक्टिवेशन के लिए लाई गई है, लेकिन जल्द ही इसे पीएफ की पूरी निकासी जैसी सेवाओं तक बढ़ाया जाएगा।
- इस तकनीक की मदद से यूजर की जानकारी अपने आप भरी जाती है, जिससे डेटा में गलती की संभावना कम हो जाती है और धोखाधड़ी से बचाव होता है।

2025 में ईपीएफओ से जुड़े कुछ और अहम बदलाव

- फॉर्म 13 में बदलाव : नौकरी बदलने पर पीएफ ट्रांसफर की प्रक्रिया अब ऑनलाइन और आसान हो गई है।

समय से पहले तोड़ना चाहते हैं एफडी, तो जान लें कैसे बचेंगे जुर्माने से

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) लंबे समय से अपनी स्थिरता और गारंटीड रिटर्न के लिए लोगों की पसंद रहे हैं। लेकिन, जीवन की अनिश्चितताओं के कारण कई बार निवेशकों को अपनी एफडी समय से पहले तोड़नी पड़ती है, जिससे जुर्माना लगता है और रिटर्न कम हो जाता है। निवेशकों को इस नुकसान से बचाने के लिए, जानकारों ने कई सुझाव दिए हैं। उन्होंने बताया कि कैसे सही रणनीति इस नुकसान को कम कर सकती है और आपके जुर्माने को घटा सकती है। पब्लिक सेक्टर बैंक समय से पहले एफडी तोड़ने पर सबसे कम जुर्माना लगाते हैं। पब्लिक सेक्टर बैंक आमतौर पर प्राइवेट सेक्टर बैंक, स्मॉल फाइनेंस बैंक और कोऑपरेटिव बैंक की तुलना में कम जुर्माना लगाते हैं। पब्लिक सेक्टर बैंक सभी वर्गों, खासकर कम आय वाले लोगों की सेवा करने के अपने व्यापक उद्देश्य के कारण अधिक उदार होते हैं। इस वजह से उनका जुर्माना कम होता है। पब्लिक सेक्टर बैंकों में जुर्माना आमतौर पर 0.50% से 1% के बीच होता है। वहीं, प्राइवेट सेक्टर और स्मॉल फाइनेंस बैंक 1% से 1.50% तक जुर्माना

ब्याज की जुर्माने में क्या भूमिका

कई निवेशक सोचते हैं कि ब्याज की गणना का समय मासिक, त्रैमासिक, छमाही या सालाना एफडी समय से पहले तोड़ने पर होने वाले नुकसान को प्रभावित करता है। लेकिन शेट्टी ने इस बारे में स्पष्ट किया। उन्होंने कहा, एफडी में ब्याज की गणना का समय इस बात पर असर डालता है कि जमा अवधि के दौरान ब्याज कैसे बढ़ता है। लेकिन जब एफडी को समय से पहले तोड़ा जाता है, तो जुर्माना उस कम ब्याज दर के आधार पर लगता है, जो एफडी के वास्तविक अवधि के लिए लागू होती है। यह जुर्माने की गणना पर सीधे असर नहीं डालता।" इसलिए, भले ही ब्याज की गणना का समय पूरी अवधि तक एफडी चलने पर कुल रिटर्न को प्रभावित करता हो, लेकिन समय से पहले तोड़ने पर जुर्माने को कम करने में इसकी भूमिका बहुत कम होती है। शेट्टी सलाह देते हैं कि कम जुर्माना वाले बैंक चुनें और अगर समय से पहले तोड़ने की संभावना हो, तो कम अवधि की एफडी चुनें।

स्मार्ट तरीके से बनाएं अपनी रणनीति एफडी लैडरिंग

कुल निवेश को कई एफडी में बांटकर, अलग-अलग समय पर परिपक्व होने वाली एफडी बनाएँ। इससे निवेशकों को समय-समय पर अपने पैसे तक पहुँच मिलती है। ऐसा करने से निवेशक अपनी पूरी जमा राशि को समय से पहले तोड़े बिना, नियमित अंतराल पर अपने फंड का कुछ हिस्सा निकाल सकते हैं।"

स्वीप-इन सुविधा

कई बैंक स्वीप-इन खाते की सुविधा देते हैं, जिसमें बचत खाते में अतिरिक्त राशि अपने आप एफडी में चली जाती है। ये जमा राशि बिना किसी जुर्माने के आसानी से निकाली जा सकती है और बचत खाते की सुविधा के साथ-साथ एफडी के अधिक रिटर्न भी देती है।

एफडी पर लोन

एफडी तोड़ने के बजाय, निवेशक इसपर लोन ले सकते हैं। "बैंक आमतौर पर एफडी की 90% तक की राशि पर लोन देते हैं, जिसका ब्याज एफडी की ब्याज दर से थोड़ा अधिक होता है। यह विकल्प जुर्माने से बचने में मदद करता है और निवेश को भी बनाए रखता है।"

क्या है एफडी

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) एक प्रकार का बचत विकल्प है जो बैंक या वित्तीय संस्थान द्वारा प्रदान किया जाता है। इसमें आप एक निश्चित राशि जमा करते हैं जो एक निश्चित अवधि के लिए जमा रहती है और आपको एक निश्चित ब्याज दर पर ब्याज मिलता है। यह एक अच्छा निवेश विकल्प हो सकता है यदि आप सुरक्षित और निश्चित रिटर्न चाहते हैं और आपको अपने पैसे को एक निश्चित अवधि के लिए जमा रखने में कोई समस्या नहीं है।

एफडी की कुछ विशेषताएं

निश्चित अवधि: एफडी की अवधि निश्चित होती है, जो कुछ महीनों से लेकर कई वर्षों तक हो सकती है।

निश्चित ब्याज दर: एफडी पर ब्याज दर निश्चित होती है, जो आमतौर पर अवधि और जमा राशि पर निर्भर करती है।

गारंटीड रिटर्न: एफडी पर रिटर्न गारंटीड होता है, जिसका अर्थ है कि आपको निश्चित ब्याज दर पर ब्याज मिलेगा।

■ अगर आप बीच में एफडी तोड़ते हैं तो सही रणनीति अपनाएं
■ नुकसान को कम कर सकेंगे और जुर्माने को भी घटा सकेंगे

एफडी के कुछ मुख्य फायदे

सुरक्षित निवेश: एफडी एक सुरक्षित निवेश विकल्प है, क्योंकि इसमें आपका पैसा बैंक या वित्तीय संस्थान के पास जमा रहता है।
निश्चित रिटर्न: एफडी पर रिटर्न निश्चित होता है, जिससे आपको पता होता है कि आपको कितना ब्याज मिलेगा।
लिक्विडिटी: एफडी में लिक्विडिटी होती है, क्योंकि आप अपनी जमा राशि को अवधि से पहले भी निकाल सकते हैं, हालांकि इसमें कुछ जुर्माना लग सकता है।

एफडी के कुछ नुकसान

कम रिटर्न: एफडी पर रिटर्न अन्य निवेश विकल्पों की तुलना में कम हो सकता है।
जुर्माना: यदि आप अपनी जमा राशि को अवधि से पहले निकालते हैं तो आपको जुर्माना देना पड़ सकता है।

खबर संक्षेप

व्यापारी का बेटा हुआ लापता, मामला दर्ज

बहल। कस्बे की पुरानी अनाज मंडी के व्यापारी का करीब 48 वर्षीय पुत्र पिछले 20 अप्रैल से लापता है। परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने युवक की गुमशुदगी का मामला दर्ज किया है। पुरानी अनाज मंडी के व्यापारी सागरमल का पुत्र विनोद पिछले 20 अप्रैल से घर से बिना बताए अचानक लापता हो गया है। व्यापारी के बड़े पुत्र प्रमोद कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि उसका छोटा भाई विनोद 20 अप्रैल को सुबह करीब 9 बजे से लापता है।

नशा मुक्त समाज को लेकर व्याख्यान 10 को

बहल। ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा विश्व मातृत्व दिवस पर नशा मुक्त समाज बनाने में महिलाओं की भूमिका विषय पर 10 व 11 मई को व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में नशामुक्ति मेडेसिन शिविर का आयोजन किया जाएगा जिसमें अनुभवी चिकित्सक नशा रोगियों का इलाज करेंगे।

किसानों को उत्पादन बढ़ाने के टिप्स बताए

भिवानी। कृषि एवं किसान किसान कल्याण विभाग तथा हिंदुस्तान गम एंड कैमिकल्स भिवानी के सौजन्य से खंड कैरू के गांव गोलपुरा में कृषि शिविर आयोजित किया, जिसमें किसानों को विभिन्न खरीफ फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए जरूरी सुझाव दिए। बतौर मुख्य वक्ता बोलते हुए चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विवि हिसार के कीट विज्ञान विभाग से सेवानिवृत डॉ. आरके सैनी ने ग्वार व नरमा फसलों की भरपूर पैदावार लेने के लिए विस्तारपूर्वक समझाया।

सेंट जेवियर्स में एनसीसी नामांकन की प्रक्रिया शुरू

भिवानी। एनसीसी कैडेट की नामांकन प्रक्रिया का शुभारंभ नए सत्र 2025 में हुआ। एनसीसी अधिकारी सूबेदार लोकेश सिंह, हवलदार रविन्द्र व संजीव ने छात्रों को एनसीसी की महत्ता और इसके लाभों के बारे में जानकारी दी। स्कूल प्रबंधक मनीष सिंह, स्कूल निर्देशिका कीर्ति चौहान व स्कूल प्राचार्या उपस्थित रहे। इस वर्ष कक्षा सातवीं से लेकर 12वीं तक के छात्रों का नामांकन किया। एनसीसी के माध्यम से छात्र न केवल शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनते हैं।

छात्रों ने की नंदीशाला में बीमार गायों की सेवा

भिवानी। बालाजी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स, चाबा के वी.एल.डी.ए. छात्रों ने भिवानी स्थित नंदीशाला में बीमार गायों एवं नंदियों की सेवा करते हुए उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। इस सेवा कार्य के अंतर्गत छात्रों ने घावों पर पट्टियाँ बाँधीं, प्राथमिक उपचार किया और पशुओं की समग्र देखभाल में अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। यह सेवा अभियान वरिष्ठ पशु चिकित्सक एवं कॉलेज प्राचार्य डॉ. तुलसी राम तथा पशु चिकित्सा सर्जन डॉ. नरेंद्र देसवाल की गरिमामयी उपस्थिति और मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। छात्रों ने आत्मीयता एवं समर्पण से कार्य करते हुए पशु सेवा का अनुकरणीय उदाहरण पेश किया।

जल संकट के विरोध में इनेलो का प्रदर्शन 6 को

भिवानी। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान द्वारा हरियाणा को पानी ना देने संबंधी बयान के बाद राजनीतिक माहौल गरमा गया है। इस विवादित टिप्पणी के खिलाफ हरियाणा में आक्रोश बढ़ता जा रहा है तथा विभिन्न राजनीतिक दलों व किसान संगठनों ने आम आदमी पार्टी व केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन की चेतावनी दी है। 6 मई को इनेलो पार्टी द्वारा भिवानी में पंजाब की आप सरकार व केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ भिवानी में रोष प्रदर्शन किया जाएगा। यह जानकारी बवानीखेड़ा हल्का अध्यक्ष कृष्ण मिताथल ने शनिवार को गांव धनाना की मुख्य चौपाल पर कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने बताया कि प्रदर्शन का नेतृत्व पूर्व विधायक औमप्रकाश गौरा करेंगे।

सचिन पंवार का आदर्श विद्या मन्दिर में भव्य स्वागत किया गया

आदर्श विद्या मंदिर के भूतपूर्व विद्यार्थी सचिन पंवार ने यूपीएससी में मारी बाजी, बच्चों को मोबाइल से दूर रहने के लिए प्रेरित किया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

आदर्श विद्या मंदिर भिवानी के लिए यूपीएससी का रिजल्ट एक उत्साहित करने वाली खबर के साथ आया है। आदर्श के 2014 बैच के एक मेहनती छात्र सचिन पंवार ने यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण कर अपने विद्यालय परिवार जन तथा अपने क्षेत्र का नाम रोशन किया। शनिवार को सचिन पंवार का आदर्श विद्या मन्दिर में भव्य स्वागत किया गया। आज उन्होंनें अपने अध्यापका का दिल से धन्यवाद किया तथा उन्होंनें अपनी सफलता का श्रेय अपने विद्यालय, कालेज तथा अपने माता पिता को दिया और बच्चों को जीवन में पढ़ाई के महत्व के बारें में बताया उन्होंनें बच्चों को अनुशासन में रहने की प्रेरणा दी, अनुशासन में रहकर ही मनुष्य अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। उन्होंनें बच्चों को मोबाइल से दूर रहने के लिए प्रेरित किया । उनका मानना है कि कड़ी मेहनत, समर्पण और सकारात्मक सोच सफलता की कुंजी हैं।

अपने उद्देश्य को ध्यान में रखकर निरंतर कठिन परिश्रम करें: सचिन पंवार

विद्यार्थियों की जिज्ञाशा की शांत

सचिन पंवार ने विद्यालय के उत्सुक छात्र छात्राओं के ढेर सारे प्रश्नों के जवाब बड़ी सहजता तथा प्यार से समझा कर दिए। उन्होनें बच्चों को बताया कि वे किस तरह अपनी दिनचर्या में से अपने स्वास्थ खानपान तथा उचित पढ़ाई का संतुलन बनाए। उन्होनें बताया कि अपने उद्देश्य को ध्यान में रखकर निरंतर कठिन परिश्रम करके ही किसी भी सफलता को हासिल किया जा सकता है। सचिन पंवार का विद्यालय में आना वर्तमान में पढ़ रहे छात्र छात्राओं के लिए एक उत्सव की तरह था जहाँ सभी ने अपने मन की सभी कुंठाओ को एक सफल भूतपूर्व छात्र से साझा कर अपने जीवन का उद्देश्य दूढ़ने में मनाया।

प्राचार्या डॉ तरंग गौड ने दी बधाई

विद्यालय प्राचार्या डॉ तरंग गौड ने धन्यवाद प्रेषित करते हुए भूतपूर्व छात्र सचिन पंवार को ढेर सारी बधाई और भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी। उन्होनें अपने वर्तमान छात्रों को सफल भूतपूर्व छात्रों से अपना जीवन आदर्शमय बनाने की प्रेरणा दी। उन्होनें उपस्थित सभी अतिथिगण व विशिष्ठ अतिथि सचिन का आने पर धन्यवाद किया।

भिवानी। यूपीएससी में बेहतरीन रैंक हासिल करने वाले सचिन को सम्मानित करते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

बीएसएफ में कमांडेट की परीक्षा उत्तीर्ण की

सचिन पंवार पुत्र सुनील पंवार ने 12वीं की पढ़ाई आदर्श विद्या मंदिर से कर स्नातक के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र संघ के प्रतिनिधि बनकर अपने नेतृत्व को निखार सचिन ने बीएसएफ में कमांडेट की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा फिर यूपीएससी में अपना परचम लहराया। आदर्श एकेडमी ऑफ साइंस के सन 2007 से अभी तक चार यूपीएससी के अधिकारी, 34 विद्यार्थी डिफेंस में अधिकारी तथा विभिन्न डॉक्टर व इंजीनियर चयनित हुए हैं । आज के इस महत्वपूर्ण तथा उत्साहित वातावरण में विद्यालय शुभकामनाओं से गूंज रहा है विद्यालय के प्रबंधक शमशेर सिंह हमेशा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए कार्यरत है, उनका मकसद जीवन के हर क्षेत्र में विभिन्न नेतृत्व, गुणों से युक्त प्रशिक्षित संगठित और प्रेरित युवाओं का एक समूह तैयार करना है जो अपने द्वारा चुने गए किसी भी करियर के बावजूद राष्ट्र की सेवा कर सके । विद्यालय के निर्देशक सत्येंद्र सिंह ने विद्यार्थियों को जीवन के लिए जरूरी आत्मबल, शारीरिक और मानसिक रूप से सुदृढ़ बनने की प्रेरणा दी।

डीसी महावीर कौशिक ने ग्रामीणों को किया संबोधित

गांव के विकास में होती है ग्रामीणों की भूमिका: डीसी

नेत्र जांच शिविर के आयोजन पर बाबा ब्रह्मचारी कमेटी और तीनों पंचायत का आभार प्रकट किया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। गांव धनाना में लोगों को संबोधित करते उपायुक्त। *फोटो: हरिभूमि*

उपायुक्त महावीर कौशिक ने कहा कि गांव के विकास में ग्रामीणों का अहम योगदान होता है। साधन संपन्न लोगों को गांव के विकास और सामाजिक कार्यों में अपना योगदान देना चाहिए। समाज सेवा से मन को शांति मिलती है। उपायुक्त कौशिक शनिवार को गांव धनाना में बाबा ब्रह्मचारी कमेटी और स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से गांव धनाना तृतीय स्थित बंगला में आयोजित निशुल्क नेत्र जांच शिविर को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने नेत्र जांच शिविर के आयोजन पर बाबा ब्रह्मचारी कमेटी और गांव धनाना की तीनों पंचायत का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि नेत्र जांच शिविर एक पुण्य का कार्य है। यदि आंखें हैं तो हम संसार को देख सकते हैं।

उन्होंने कहा कि आंखों के साथ-साथ हमें अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना चाहिए। वर्तमान की भागदौड़ की जिंदगी में अक्सर हम स्वास्थ्य की तरफ ध्यान नहीं दे पाते और आजकल खानपान बदल गया है, ऐसे में जरूरी है कि हम समय-समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच भी करवाएं ताकि किसी भी प्रकार की लाइलाज बीमारी का समय रहते इलाज हो सके। उन्होंने कहा कि जरूरतमंद लोगों को आंखों की जांच के बाद ऑपरेशन करवाने में जिला प्रशासन द्वारा स्वास्थ्य विभाग की ओर से हर संभव सुविधा प्रदान की जाएगी।

गांव की कोलकाता तक पहचान

उपायुक्त ने कहा कि गांव धनाना की पश्चिम बंगाल के कोलकाता तक पहचान है। उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद गांव धनाना निवासी सेठ डॉक्टर सांवर की तारीफ करते हुए कहा कि वे कोलकाता में रहते हुए भी अपने नाम के साथ धनाना लिखते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि इंसान चाहे कितने ही बड़े ओहदे पर क्यों न पहुंच जाए, उसको अपनी जन्मभूमि और कर्म भूमि को कभी नहीं भूलना चाहिए। जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है। नेत्र जांच शिविर के संयोजक एवं पूर्व आईजी राजपाल सिंह ने कहा कि नेत्र जांच शिविर के बाद जरूरतमंद लोगों के ऑपरेशन भी करवाए जाएंगे। बाबा ब्रह्मचारी कमेटी द्वारा समय समय पर स्वास्थ्य शिविरों और अनेक धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिसमें ग्रामीणों का भरपूर सहयोग रहता है। गांव धनाना सामाजिक सद्भाव और भाईचारे की एक मिसाल है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सेठ सांवर ने कहा कि उनको अपनी मातृभूमि धनाना पर गर्व है। कार्यक्रम को सिविल सर्जन डॉक्टर रघुबीर शांडिल्य ने भी संबोधित किया।

उन्होंने ग्रामीणों को आश्वासन देते हुए कहा कि गांव में ग्रामीणों को हर संभव मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाई जाएंगी।

कैडेट्स का साक्षात्कार लिया

- गांव कलिंगा स्थित श्रीबालाजी स्कूल में कैडेट्स की लिखित और शारीरिक परीक्षा का आयोजन किया।

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) द्वारा शनिवार को गांव कलिंगा स्थित श्रीबालाजी स्कूल में कैडेट्स की लिखित और शारीरिक परीक्षा का आयोजन किया। इस परीक्षा में बड़ी संख्या में एनसीसी कैडेट्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय प्राचार्य अतर सिंह व संचालिका रेणुका शर्मा ने की। उन्होंने बताया कि सूबेदार सुरेंद्र सिंह और विद्यालय के एनसीसी निरीक्षक मुरारी लाल की देखरेख में सुबह 9 बजे से 12 बजे तक शारीरिक व बाद में लिखित परीक्षा ली। परीक्षा के उपरांत कैडेट्स का साक्षात्कार लिया तथा योग्य उम्मीदवारों को एनसीसी के लिए चयनित किया। विद्यालय संचालिका रेणुका शर्मा ने बताया कि लिखित परीक्षा में कैडेट्स के सामान्य ज्ञान, नागरिक शास्त्र, सैन्य विषयों और एनसीसी संबंधित विषयों की जानकारी को परखा गया।

इसके बाद शारीरिक दक्षता परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें दौड़, लम्बी कूद, पुश-अप्स, एवं अन्य शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से कैडेट्स की फिटनेस और अनुशासन का परीक्षण किया गया।

लोगों और पशुओं को पीने तक का पानी नहीं: कामरेड

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

- जीवन से जुड़े सवाल पर संकीर्ण राजनीति से दोनों राज्यों में भाईचारा होगा खराब

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी हरियाणा के प्रतिनिधिमंडल ने पानी के मुद्दे लेकर राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा आहुत चंडीगढ़ बैठक में मूल्यवान सुझाव दिए। पार्टी के राज्य सचिव प्रेमचंद व राज्य सचिव मंडल सदस्य कामरेड ओमप्रकाश ने बैठक के बाद बताया कि पिछले कुछ समय से हरियाणा राज्य के कई जिलों में नहरी पानी की भारी किल्लत दिन प्रतिदिन विकट से विकटतम होती गई है।

हरियाणा और पंजाब के बीच पानी का बंटवारा दशकों से विवादास्पद रूप में लंबित है, जिसके न्यायपूर्ण समाधान की दरकार है। परंतु इस अवसर पर हम उस सवाल की चर्चा नहीं कर रहे हैं। फिलहाल नहरी पानी की भारी कमी के चलते हरियाणा के लोगों और पशुओं को पीने तक का पानी नहीं मिल रहा है। भयंकर गर्मी के इस मौसम में जो मानवीय संकट पैदा हो गया है, उसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है। शहरों और गांवों में जल वितरण के टैंकों में पानी नहीं बचा है और जोहड़ भी सूखने के कगार पर हैं।

विधायक के छोटे भाई से खिलाड़ियों व कोच ने की मुलाकात

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के युवा खिलाड़ियों व कोच ने विधायक के छोटे भाई राकेश वाल्मीकि से खेल स्टेडियम के बनवाने की मांग की वही राकेश वाल्मीकि ने भी बताया कि इसके बारे में जल्दी ही बवानी खेड़ा वीडियो को तोहफा मिलेगा। विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि के लाइडे छोटे भाई राकेश वाल्मीकि जमालपुर, पपोसा, सिप्पर से आंधी तुफान बारिश से हुए नुकसान के लिए लोगों से मिलकर आ रहे थे और आते समय खिलाड़ियों से मिले वही खिलाड़यों ने बताया कि बवानी खेड़ा में खेल स्टेडियम की अति आवश्यकता है इसको लेकर उन्होंने पूरा आश्वासन दिया।

बच्चों ने जल संरक्षण का संकल्प लिया

- मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ, प्रिंट मीडिया का महत्व आज भी बरकरार : यादव

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। पौधा लेकर जल एवं पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लेते विद्यार्थी।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस युवा जागृत सेवा समिति व सदाचारी शिक्षा समिति ने विवेकानंद हाई स्कूल में विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों, शिक्षकों और समाजसेवियों ने पत्रकारिता के महत्व के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य 'कलम व कलम के सिपाही' विषय के माध्यम से प्रेस की स्वतंत्रता, प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भूमिका व सोशल मीडिया की प्रभावशीलता पर प्रकाश डालना रहा।

विद्यार्थियों ने पोस्टर, भाषण व रचनात्मक प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने बताया कि प्रेस की स्वतंत्रता केवल पत्रकारों की नहीं, बल्कि पूरे समाज की आवाज है, जो अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ जनमत बनाती है। कार्यक्रम संयोजक व राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता अशोक कुमार भारद्वाज ने कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पत्रकारिता समाज को दिशा देने में अहम भूमिका निभाती है, जब कोई पत्रकार निर्भीक होकर सच्चाई को सामने लाता है, तो वह समाज के लिए मजबूत आवाज बन जाता है। स्कूल की संचालिका सावित्री यादव ने पत्रकारों को बधाई देते हुए कहा कि आज के डिजिटल युग में भले ही सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव बढ़ा हो, लेकिन प्रिंट मीडिया का महत्व आज भी बरकरार है। इस मौके पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को पौधे देकर सम्मानित किया और विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई पोस्टरों की प्रदर्शनी आयोजित की।

विद्यालय सबसे बड़ी प्रयोगशाला: प्राचार्य

- बच्चों की विशेष प्रतिभा को तराशने की जिम्मेवारी है विद्यालय की : प्राचार्य

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। पौराणिक कथाओं के अनेक रूप के साथ खड़े बच्चे। *फोटो: हरिभूमि*

विद्यालय एक सबसे बड़ी प्रयोगशाला है, जहां पर बच्चों के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास के लिए अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसके साथ ही बच्चों में उपस्थित विशेष प्रतिभा को तरासने का कार्य भी विद्यालय ही करता है।

यह बात स्थानीय सैक्टर-13 स्थित दि ऑकवुड स्कूल में शनिवार को प्रातः कालीन सभा में बच्चों को संबोधित करते हुए प्राचार्य सज्जन भारद्वाज में प्रातः कालीन वंदना में बच्चों के साथ सांझा किए। गौरतलब होगा कि ऑकवुड स्कूल के कक्षा नर्सरी से यूकेजी तक के सभी छात्रों को स्थानीय चिड़ियाघर की सैर के लिए भेजा गया, जहां छात्रों ने वन्य जीवन का भरपूर आनंद लिया। हिरण की उछाल कूद के साथ बच्चे भी आनंद से हिलोरें लेते हुए दिखाई दिए तथा दरियाई घोड़े के दर्शन पर बच्चे उसके विशालकाय शरीर को देखकर अभिभूत हो रहे थे। चिड़ियाओं की चहचाहट तथा भालू की गुर्राहट बच्चों को रोमांचित कर रही थी।

इसी क्रम में प्रथम कक्षा से तीसरी कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों को श्री श्याम दर्शन के लिए धारेडूधाम भेजा गया, जहां श्री खाटू श्याम के दर्शन के साथ-साथ श्याम वाटिका में भी बच्चों ने अपने पौराणिक कथाओं के अनेक रूप देखकर अपने साहित्यिक व आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि की।

पेंटिंग में देव ने मारी बाजी

प्रतियोगिता में पेंटिंग व स्केचिंग के प्रथम ग्रुप में देव प्रथम, दिशा द्वितीय तथा अनीश तृतीय स्थान पर रहे। दूसरे वर्ग में भावी प्रथम व रिहान द्वितीय स्थान पर रहे। पेंटिंग प्रतियोगिता में आशुतोष प्रथम, सृष्टि द्वितीय तथा चक्षिता तृतीय स्थान पर रहे। तीसरे ग़ुरप में स्केचिंग में रितिक सांगवान प्रथम, सिद्धार्थ द्वितीय तथा श्रेया व आरती संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। इसी वर्ग में चित्रकारी प्रतियोगिता में कनिष्क प्रथम, हर्ष राठी द्वितीय तथा दृष्टि व मोक्ष तृतीय स्थान पर रहे।

नृत्य प्रतियोगिता में दी अपनी प्रस्तुती

भिवानी। भिवानी पब्लिक स्कूल में अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस के उपलक्ष्य में कक्षा तीसरी से लेकर आठवीं तक नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें लगभग 58 विद्यार्थियों ने अपनी प्रतियोगिता के माध्यम से सभी दर्शकों का मन मोह लिया। इस स्पर्धा में विद्यार्थियों के परिजन भी उपस्थित थे । विद्यार्थियों की नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियों ने समा बाँध रखा था।विद्यार्थियों ने विभिन्न पारंपरिक गीतों पर अपने नृत्य का प्रदर्शन किया। विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों पर आधारित लोक नृत्य की छटा सभी का मनमोह रही थी। पंजाब का भांगड़ा, राजस्थान का घूमर, महाराष्ट्र की लावणी आदि नृत्यों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रत्येक कक्षा वर्ग में से प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार विद्यार्थियों को दिए गए तथा सभी कक्षाओं के प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। निर्देशिका आशा पाहुजा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार के अवसर विद्यार्थियों में न केवल ऊर्जा का संचार करते हैं बल्कि उनकी कलात्मकता को भी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

लोगों का जागरूक होना बहुत जरूरी: महंत चरणदास

नशामुक्त हरियाणा संकल्प रथयात्रा का स्वागत

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। नशामुक्त संकल्प यात्रा को रवाना करते चेयरमैन सुंदर अत्री, महंत चरणदास महाराज। *फोटो: हरिभूमि*

नशामुक्त समाज के स्वप्न को पूरा करने के उद्देश्य से युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट द्वारा निकाली जा रही नौ दिवसीय प्रदेश स्तरीय नशामुक्त हरियाणा संकल्प रथयात्रा शनिवार को कस्बा बवानीखेड़ा में पहुंची।

हनुमान जोहड़ी मंदिर के महंत बालयोगी चरणदास महाराज के नेतृत्व में निकाली जा रही नशामुक्त हरियाणा संकल्प यात्रा के बवानीखेड़ा में पहुंचने पर बवानीखेड़ा नगर पालिका चेयरमैन सुंदर अत्री के नेतृत्व में अनेक ग्रामीणों ने यात्रा का स्वागत किया तथा यात्रा संचालकों के प्रयास की सराहना करते हुए इसे समाज व देश हित में सराहनीय कदम बताया। इस दौरान महंत चरणदास महाराज व चेयरमैन सुंदर अत्री ने उपस्थित जन को नशे से दूर रहने का संकल्प भी दिलाया। चेयरमैन अत्री ने यात्रा को बवानीखेड़ा से हरी झंडी रवाना किया, जिसके बाद यात्रा ने गांव जाटु लोहारी व कुंगड़ में ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभाव बताए। महंत चरणदास ने कहा कि नशामुक्त समाज की परिकल्पना के लिए जागरूकता रैली का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये समाज के सभी वर्गों में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति चेतना फैलाने का प्रभावशाली माध्यम है। उन्होंने कहा कि रैली के माध्यम से लोगों को बताया जा रहा है कि नशा केवल व्यक्ति ही नहीं, पूरे परिवार और समाज को प्रभावित करता है। विशेष रूप से युवाओं को यह संदेश दिया जाता है कि नशे से दूर रहकर वे अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। इस मौके पर बवानीखेड़ा नगर पालिका के चेयरमैन सुंदर अत्री ने कहा कि नशे के खिलाफ एकजुटता दिखाकर हम नशे जैसी सामाजिक बुराई को खत्म कर सकते है। इस अवसर पर गांव जाटु लोहारी स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय से सीमा देवी सत्यवान, मंडल अध्यक्ष प्रदीप राणा जगन्नाथ महता, रामकिशन काजल, देवेंद्र डीपी, मनीष शंकर, गजेन्द्र शर्मा आदि मौजूद रहे।

युद्ध केवल तबाही एवं विनाश का मंजर, बेकसूर लोग बनते हैं अकाल मौत का ग्रासः उपेंद्र मुनि

भारत युद्ध में विश्वास नहीं रखता, भारत को युद्ध करना भी नहीं चाहिएः उपेंद्र मुनि

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भिवानी

भिवानी। पत्रकारों से वार्ता करते जैन मुनि महर्षि पंडित रत्न शास्त्री उपेंद्र मुनि महाराज।

जम्मू के पहलगाम में आतंकी हमले एवं उसके बाद भारत पाकिस्तान के बीच बनी तनाव की स्थिति पर जैन मुनि महर्षि पंडित रत्न शास्त्री उपेंद्र मुनि महाराज ने चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि भारत युद्ध में विश्वास नहीं रखता, भारत को युद्ध करना भी नहीं चाहिए। यूक्रेन-रूस, हमास और इजरायल युद्ध का क्या हश्र हुआ और दुनिया को इससे क्या मिला। युद्ध केवल तबाही एवं विनाश करता हैं और बेकसूर लोग अकाल मौत का ग्रास बनने हैं, पूरी दुनिया इससे रूबरू हैं। उपेंद्र मुनि ने धर्म, संस्कृति एवं संस्कारों के गिरते स्तर पर भी चिंता जताई। उन्होंने युवावर्ग को संदेश प्रेषित किया कि वे अंतरजातीय विवाह न करके अपनी ही जाति में विवाह करें, जिससे सामाजिक ताना बाना खराब न हो, तनाव की स्थिति न बने व परिवार वालों को शर्मिंदगी न उठानी पड़े।

जैन मुनि महर्षि पंडित रत्न शास्त्री उपेंद्र मुनि शनिवार को कोर्ट रोड पुराना हाउसिंग बोर्ड स्थित श्रीएसएस जैन सभा में पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज धर्म, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है, पहले राजनीति में धर्म का स्थान था, लेकिन आज राजनीति ने धर्म पर प्रभाव जमाया है, जिससे विकट परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं। उपेंद्र मुनि ने कहा कि इंसानियत सबसे बड़ा धर्म है, लेकिन वर्तमान में इंसानियत खतरे में है। धर्म और संस्कृति अब केवल मौखिक बनकर रह गए, आचरण से दूर हो चुके हैं, जिसकारण समाज में कुसंस्कार जन्म ले रहे हैं। हाल ही में पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि भारत में कई ऐसे स्थान हैं, जहां लंबे समय से कोई घटना नहीं हुई, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि वहां से सुरक्षा हटा ली जाए। पहलगाम में सुरक्षा की कमी के कारण इतना बड़ा हादसा हुआ, लाखों पर्यटक जहां घूमने पहुंचते हैं, लेकिन वहां पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था न होना बहुत बड़ी खामि हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध समाधान है या नहीं के सवाल पर उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत युद्ध में विश्वास नहीं रखता और युद्ध कोई समाधान नहीं है। उन्होंने यूक्रेन-रूस और हमास-इजरायल युद्धों का उदाहरण देते हुए कहा कि युद्ध से केवल तबाही एवं विनाश होता है, समाधान नहीं, युद्ध से बेकसूर लोग अकाल मौत का ग्रास बनने हैं और पहले से आर्थिक रुप से कमजोर लोगों की आर्थिक स्थिति ओर बिगड़ती हैं। इस अवसर पर श्री एसएस जैन सभा के सदस्य एडवोकेट पवन जैन, एडवोकेट बीबी जैन, हरिकेश जैन, रमन जैन, देवेंद्र डीके जैन, हिमांशु, महेंद्र आर्य, सुब्रत जैन, अनिल जैन, बंटी जैन, विकास जैन और सचिन जैन आदि उपस्थित रहे।

वाहन नहीं, कदमों से नापते हैं जमीन

उपेंद्र मुनि महाराज ने कहा कि वे हमेशा नंगे पैर पदयात्रा करते हैं और कभी भी वाहन का प्रयोग नहीं करते। इसके पीछे का कारण जमीन से जुड़े रहना और कदम-कदम की स्थिति से रूबरू होना हैं। उन्होंने कहा कि वे वाहन का प्रयोग करेंगे तो कुछ समय में ही दिल्ली, मुम्बई या किसी भी बड़े शहर में पहुंच जाएंगे, लेकिन जमीन को अपने कदमों से नापने या चलने से वे हर जगह की स्थिति से रूबरू होते हुए चलते हैं। धर्म का प्रचार-प्रसार के लिए वे जी चाहा वहां रूक जाते हैं और जी चाहा तब चल पड़ते हैं।

शरीर से ज्यादा मन की स्वच्छता जरूरी

उनके नहीं नहाने के सवाल के जवाब में उपेंद्र मुनि ने कहा कि शरीर की स्वच्छता से ज्यादा मन की स्वच्छता बहुत जरूरी हैं, वे गीले कपड़े से अपने शरीर को साफ सुथरा रखते हैं और उनका मन स्वच्छ हैं। हर व्यक्ति अपने लिए अच्छा और दूसरों के लिए इसके विपरित चाहता हैं और मुंह में राम बगल में छुरी वाली कहावत को चरितार्थ कर रहा हैं। व्यक्ति बाहर से अच्छा एवं मित्रवत व्यवहार करता है, लेकिन अंदर उसके मन में शत्रुता और पीठ पीछे से बुराई करता है, इसलिए प्रतिदिन नहाने पर भी अगर आपके अंदर का मैलापन समाप्त नहीं होता तो ऐसे नहाने का क्या फायदा। प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति एवं जीवन से सीख ले लें कि जैसा आप किसी को परोसोंगे, भविष्य में ब्याज समेत आपको वहीं मिलेगा।

एआईकेकेएमएस ने राकेश टिकैत पर किए गए हमले का किया विरोध

तोशाम। ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन ने मुजफ्फरनगर में किसान नेता एवं संयुक्त किसान मोर्चा के अग्रिम नेता राकेश टिकैत पर किए गए हमले एवं अपमानजनक ओछी हरकतों का कड़ा विरोध किया है। प्रेस को जारी बयान में संगठन के जिला प्रधान रोहतास सिंह सैनी ने कहा कि पहलगाम में हुए नृशंस हत्या-काण्ड को रोकने में सरकारी विफलता से ध्यान बटाने और उसे हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य का रंग देने वाली ताकतें देश में जनतांत्रिक आवाज को दबाने की कुचेष्टा में जोर-शोर से लगी हुई हैं। उन्होंने कहा कि गत दिवस संयुक्त किसान मोर्चा के हमारे साथी किसान नेता राकेश टिकैत पर किया गया हमला घोर निंदनीय एक ओछी हरकत है। उनका कहना था कि इसका देश भर में जितना विरोध हो वह उतना ही कम है।

खबर संक्षेप

पशु चिकित्सकों ने हार्निया का जटिल ऑपरेशन कर बचाई कुत्ते की जान

भिवानी। पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ. रविंद्र सहरावत ने पदभार संभालते हुए यह ठाना था कि अब पशुपालन को ऑपरेशन आदि के लिए हिसार यूनिवर्सिटी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा तथा कठिन से कठिन ऑपरेशन भिवानी पॉलीक्लीनिक में किए जाएंगे। इसी कड़ी में शनिवार को पशु चिकित्सक जोनी ने एक कुत्ते का हार्निया का सफल ऑपरेशन किया, ये बहुत ही जटिल ऑपरेशन था। इस ऑपरेशन में पहले ट्यूमर को हटाया गया और उसके बाद इंसानों की तरह जाली डाली गई। इस बीमारी में आंत, पेशाब का ब्लैडर और गुदा तीनों अपनी जगह छोड़कर दूसरे स्थान पर चली गई थी, जिसकी वजह से कुत्ते को पेशाब, शौच करने और खाने-पीने में दिक्कत आ रही थी। डॉ. जोनी ने बताया कि वेटनरी पॉलीक्लीनिक भिवानी में पशुओं के बड़े-बड़े ऑपरेशन किए जाते है, पशु चिकित्सक बीमार पशुओं का उपचार कर कर्तव्य का बाखूबी निर्वहन कर रहे है।

यदुवंशी में विज्ञान क्विज स्पर्धा में दिखाई प्रतिभा

चरखी दादरी। मंदौला स्थित यदुवंशी शिक्षा निकेतन में विज्ञान के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विज्ञान क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता कक्षा 9वीं से 12वीं के छात्रों के लिए आयोजित की, जिसमें भौतिकी विषय पर आधारित प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता विद्यालय के अंबेडकर, भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव सदन ने हिस्सा लिया। छात्रों ने विज्ञान के क्षेत्र में अपनी समझ, सजगता और तीव्र बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते हुए पूरे उत्साह से भाग लिया। कड़े मुकाबले के बाद अंबेडकर सदन से मनस्वी, गौरव, भावना और मेघना ने प्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। भगतसिंह सदन मानसी, यशस्वी, मयंक और नितेश ने द्वितीय स्थान और राजगुरु सदन से अनुष्का, दीक्षा, कीर्ति और अयान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

अन्न से भरा मन, कनक की हुई बेकद्री, कच्चे शेड से आया गेहूं सड़कों पर

मार्केट कमेटी की व्यवस्थाओं की खुली पोलः सिंधू

शुक्रवार आई तूफानी बारिश ने मंडी के बाहर कच्चे व खुले में पड़े गेहूं को पूरी तरह से भिगो दिया।

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भिवानी

भिवानी। कच्चे शेड से सड़क पर डाला गया गेहूं का दृश्य व अनाजमंडी में भीगे गेहूं को लेकर बातचीत करते सोसायटी के पूर्व डायरेक्टर। फोटो : हरिभूमि

शायद इस बार सरकारी एंजेसियों को गेहूं की खरीद से मन भरा गया है। इस बात का अंदाजा तो गेहूं की खरीद व्यवस्थाओं से लगता है। क्योंकि प्रशासन ने इस तरह की एजेंसियों को गेहूं खरीदने की अनुमति दे दी,जिनके पास न तो कोई पक्के चबूतरे की व्यवस्था थी और न ही बिछाने व गेहूं को ढकने के लिए तिरपाल की सुविधा थी। शुक्रवार अल सुबह आई तूफानी बारिश ने मंडी के बाहर कच्चे व खुले में पड़े गेहूं को पूरी तरह से भिगो दिया। यहां तक तक लिफ्टिंग ने किए गए बैग भी बारिश में तर बतर हो गए। अब खरीद एजेंसी के संचालक बैगों को कच्ची भूमि से उठवा कर सीमेंट की बनी सड़क पर डाल रहे है। हैरानी की बात यह है कि जहां पर बैग खोलकर डाले गए है। उसी रास्ते से बाइक व अन्य वाहन गुजर रहे है। ऐसे में उस गेहूं की गुणवता बच पाना नाममुकिन है। साथ ही जिस सड़क पर गेहूं के खोलकर बैग डाले गए है। वहां पर न तो कोई तिरपाल आदि बिछाया गया है। जब इन बैगों को दोबारा भरा जाएगा तो सड़क पर जमा रेत मिट्टी व पक्की छोटी रोड़ियां भी गेहूं के दानों के साथ बैगों में पैक हो जाएगी। जो कि बाद में राशन डिपो, स्कूलों में मीड डे मिल के लिए तथा उसी गेहूं को गरीबों के लिए भेजा जाएगा। जो यह गेहूं पैक होगा। लगता है वह गेहूं खाने के लायक नहीं बच पाएगा। यहां यह बताते चले कि अगर एक बार गेहूं भीग गया और दो तीन दिनों तक नमी बरकरार रही तो उसकी गुणवता ही नहीं बल्कि वह काला पड़ने लगेगा। जिसका टेस्ट भी बदल जाएगा। फिलहाल जिस हाल में मंडी में गेहूं पड़ा है, वह पूरी तरह मार्केट कमेटी की व्यवस्थाओं पर चोट है।

प्रशासन की व्यवस्थाओं की खुली पोलः राजेश

मार्केट सोसयटी के पूर्व निदेशक एवं हरियाणा जागृति मोर्चा के अध्यक्ष राजेश सिंधू ने शनिवार को अनाजमंडी का निरीक्षण किया और मजदूरों से भीगे गेहूं की जानकारी ली। पूरी जानकारी हासिल करने के बादराजेश सिंधू ने बताया कि फसलों की सरकारी खरीद से पहले अनाजमंडियों व खरीद केंद्रों पर पक्के चबूतरे बनवाए जाने चाहिए। साथ ही मंडियों में अतिरिक्त शैडों का निर्माण होना चाहिए। ताकि मौसम खराब होने पर फसलों को वहां पर डाला जा सके,लेकिन बवानीखेड़ा का स्थानीय विधायक होने के बाद मंडी में गेहूं की बेकद्री हुई है। इससे साफ जाहिर है कि जन प्रतिनिधि इस तरफ कोई ध्यान ही नहीं दे रहा। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि जो गेहूं मंडियों में भीगा है।

गेहूं की देखरेख की जिम्मेदारी एजेंसियों की

बताया जाता है कि किसान अपने सम्पर्क के आढती या खरीद करवाने वाले एजेंट के माध्यम से मंडी या खरीद केंद्र पर गेहूं डाल देता है। उसके बाद उस गेहूं की सफाई, बैगों में भरवाई तथा बैगों की लिफ्टिंग करवाए जाने का कार्य खरीद करवाने वाले एजेंट का होता है। अगर उसमें कोई गड़बडी(ज्यादा नमी, सफाई की कमी, बारिश आदि में ढकवाने की जिम्मेदारी) की भी जिम्मेदारी उसी की होती है। बीते दिवस बारिश में गेहूं भीग गया,उसमें ज्यादा नमी बन गई। इनके साथ मंडी में पहुंचा गेहूं डलवाने से लेकर वेयर हाऊस में भिजवाने तक की सह जिम्मेदारी मार्केट कमेटी की भी होती है। क्योंकि मंडी में जो गेंहू पहुंचा है। उसके लिए शैड, पक्का चबूतरा व तिरपाल आदि की जैसे तैसे व्यवस्था करवाने की भी जिम्मेदारी प्रशासन की होती है,लेकिन किसी ने भी इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। जिस वजह से गेहूं की मंडियों में बेकद्री हो रही है।

लाखों रुपये छिनने वाले दो अन्य साथियों को पकड़ा

बवानीखेड़ा। बाइक पर सवार दो व्यक्तियों ने पिस्टल प्वाइंट पर एक डाक विभाग के कर्मचारियों से 4,66,629 रुपए छीनने के मामले में शिकायतकर्ता सहित तीन लोगों को पकड़ा है। आरोपियों ने कर्जा उतारने के लिए यह लूट की योजना बनाई थी। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। एक मई को गांव किरावड में डाक घर में तैनात जीडीएस सहायक विकास ने पिस्तोल की नोक पर चार लाख 66 हजार रुपये लूटने का आरोप लगाया था। डीएसपी आर्यन चौधरी ने जानकारी देते हुए बताया कि दो मई को सीआईए स्टाफ भिवानी की टीम के उप निरीक्षक सुभाष ने अपनी टीम के साथ गांव किरावड भारतीय डाक सेवा में कार्यरत जी डी एस सहायक विकास से पिस्टल पॉइंट पर लाखों रुपए छिनने के मामले में खुद शिकायतकर्ता विकास पुत्र धर्मपाल को उसके दो अन्य साथियों के साथ गांव बड़सी से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गांव किरावड में भारतीय डाक सेवा में जी डी एस सहायक के पद पर तैनात शिकायतकर्ता विकास पुत्र धर्मपाल ने अपने दो साथी अनीश व सुमित के साथ मिलकर एक मई को डाक विभाग के लाखों रुपए लूटने की योजना बनाई थी।

ट्रैक्टर की चपेट में आने से नाबालिग लड़के की हुई मौत

तोशाम। ट्रैक्टर की चपेट में आ जाने से गांव खानक में रतेरा के एक नाबालिग लड़के की मौत हो गई। सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने परिजनों की शिकायत पर ट्रैक्टर चालक के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्जकर लिया है। गांव किरावड़ निवासी नरेश ने बताया कि दो मई को वे और उनके भाई का बेटा भारत बाइक से खानक से डाडम की ओर काम पर जा रहे थे। इसी दौरान पीछे से तेज गति और लापरवाही से चल रहा ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी।

जूनियर डिवीजन व जूनियर विंग कैंडेट्स का चयन

हरिभूमि न्यूज ▸▸ चरखी दादरी

कस्बा बौंदकलां स्तिथ आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को कर्नल राजेश दहिया के नेतृत्व में 11 हरियाणा एनसीसी बटालियन भिवानी आर्मी विंग जूनियर डिवीजन और जूनियर विंग कैंडेट्स कि चयन प्रक्रिया की गई। प्रक्रिया में करीब 110 छात्रों ने भाग लिया। जिसमें से 33 लड़के व 17 लड़कियों का एनसीसी जूनियर विंग के लिए चयन हुआ। सुबेदार मेजर डी गोपाल, सुबेदार अनिल कुमार व बीएचएम अशोक कुमार व हवलदार आरीफ द्वारा सभी छात्रों का शारीरिक व मानसिक दक्षता का परीक्षण किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य कृष्णदत्त यादव ने सभी चयनित छात्रों को बधाई दी। एनसीसी इंचार्ज सेकंड ऑफिसर कंवर सिंह यादव ने एनसीसी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए चयनित हुए एनसीसी कैडेट्स को देश सेवा के लिए प्रेरित किया।

एनसीसी की चयन प्रकिया में हिस्सा लेते विद्यार्थी।

विद्यार्थियों को किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ▸▸ चरखी दादरी

प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी विद्यार्थी। फोटोः हरिभूमि

बीआर आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल बिरही कलां में प्रार्थना सभा में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में स्कूल के चेयरमैन कृष्ण भारद्वाज ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया। समारोह में अप्रैल महीने में हुई विभिन्न शैक्षणिक और सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों में विशेष उपलब्धि हासिल करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र और पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। स्कूल प्रबंधन के अनुसार ये समारोह विद्यार्थियों को प्रेरित करने और उनकी मेहनत को निखारने के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

मौड़ी सीबीएस स्कूल में भजन-कीर्तन एवं सत्संग

हरिभूमि न्यूज ▸▸ चरखी दादरी

चरखी दादरी। सीबीएस स्कूल में भजन कीर्तन में उपस्थित श्रद्धालु।

मौड़ी स्थित सीबीएस स्कूल में हनुमान जयंती पर सामूहिक भजन-कीर्तन एवं सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में मौड़ी, मकड़ानी, खोरड़ा, बलकरा, दूधवा सहित आसपास के गांवों की महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया और भक्तिभाव से ओतप्रोत भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 10:30 बजे विद्यालय की परंपरा अनुसार मां सरस्वती की पूजा-अर्चना से की। तत्पश्चात भगवान हनुमानजी के समक्ष विधिवत पूजा कर सत्संग की शुरुआत हुई। सत्संग कार्यक्रम का संचालन चुन्नीलाल बंसल (दादरी), सीताराम एवं नरेश के मार्गदर्शन में हुआ। लगभग दोपहर दो बजे तक चले कार्यक्रम में महिलाओं ने हनुमान भक्ति से जुड़े अनेक भजनों की प्रस्तुति दी और उन पर भावपूर्ण नृत्य भी किया। पूरे वातावरण में भक्ति, श्रद्धा और उल्लास की भावना व्याप्त रही।

पक्षियों के संरक्षण में खुशियों की दीवारे की प्रेरणादायक पहल

विधायक सांगवान ने घर में पक्षियों के लगाए घोंसले और किया पानी का प्रबंध

- विधायक ने पक्षियों के लिए दाना-पानी और आश्रय की व्यवस्था कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया

हरिभूमि न्यूज ▸▸ चरखी दादरी

चरखी दादरी। पक्षियों के लिए घोंसला लगाते विधायक सुनील सांगवान।

दादरी जिले में प्रकृति से जुड़ी एक संवेदनशील और सराहनीय पहल देखने को मिली है। विधायक सुनील सांगवान ने अपने निवास पर पक्षियों के लिए दाना-पानी और आश्रय की व्यवस्था कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। यह प्रयास केवल एक प्रतीकात्मक कार्य नहीं, बल्कि मानवता और पर्यावरण के प्रति गहन संवेदनशीलता का परिचायक है। संजय रामफल ने बताया कि खुशियों की दीवार यह नाम अब सिर्फ जरूरतमंदों की सहायता का प्रतीक नहीं रहा, बल्कि यह एक ऐसा आंदोलन बन चुका है जो जीव-जंतुओं, पक्षियों और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी अपना योगदान दे रहा है। खुशियों की दीवार पिछले कई वर्षों से यह अभियान दादरी सहित आसपास के क्षेत्रों में पक्षियों के लिए दाना-पानी, छांव और रहने की व्यवस्था के कार्यों को लगातार संचालित कर रहा है। सुनील सांगवान ने खुशियों की दीवार के इस अभियान की न केवल सराहना की बल्कि अपने आवास को भी इस मुहिम का सक्रिय हिस्सा बना दिया। उन्होंने अपने निवास स्थान पर विशेष रूप से तैयार किए गए छोटे-छोटे लकड़ी के घोंसले लगाए, ताकि पक्षियों को सुरक्षित और शांत वातावरण में आश्रय मिल सके। उन्होंने कई स्थानों पर मिट्टी के बर्तन और पानी के पात्र लगाए हैं, जिनमें रोजाना ताजा पानी और अनाज डाला जाएगा। यह व्यवस्था विशेष रूप से उन गर्मियों के दिनों के लिए है जब पक्षियों को पानी और भोजन की तलाश में लंबी उड़ानें भरनी पड़ती हैं और वे अक्सर थककर दम तोड़ देती हैं। विधायक ने कहा कि प्रकृति और मानवता का मिलन यह पहल सिर्फ एक पर्यावरणीय जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक भावनात्मक जुड़ाव का प्रतीक है। पक्षी न केवल हमारे पर्यावरण के लिए आवश्यक हैं, बल्कि वे हमारे जीवन में सौंदर्य, शांति और संतुलन भी लाते हैं।

अध्यापक बच्चों को अच्छे भावी नागरिक बनाने में अपना योगदान देंः मधुलिका

चरखी दादरी। बरसाना मोड़ स्थित एसईडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विषय विशिष्ट सीबीपी सामाजिक विज्ञान विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में सीबीएसई रिसोर्सपर्सन मधुलिका सिंह प्राचार्या संस्कृति मॉडल स्कूल एवं मदनलाल साहनी फ्रीलांसर का स्वागत विद्यालय के चेयरमैन जसवंत सहारन, प्राचार्य मुकेश जाखड़, आर्यावर्त विद्यालय के चेयरमैन पवन वशिष्ठ ने किया। कार्यशाला का शुभारंभ विद्यालय की प्रबंधक समिति व रिसोर्सपर्सन की अगुवाई में मां सरस्वती के समक्ष द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यशाला में अन्य स्कूलों के लगभग 40 अध्यापक उपस्थित रहे। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों की प्रतिभा को उजागर करना रहा। कार्यशाला में एसईडी बरसाना मोड एवं एसईडी ढाणी शंकर सहित अनेक सभी स्कूलों के सामाजिक विज्ञान विषय के अध्यापकों ने अनेक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेकर अपनी अहम भूमिका निभाई और विषय संबंधित ज्ञान अर्जित किया। कार्यशाला में प्रवक्ता ने मानचित्र की महत्ता, विषय शैलियों, एनसीएफ वायरस, शिक्षण विधियों के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां दी,जिससे सामाजिक अध्ययन में बच्चों की रुचि बढ़ पाए। आज के समय में बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखना बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए अध्यापक वर्ग को अपने विषय को पढ़ाने एवं समझाने के लिए अनेक तथ्यों से अवगत होना बहुत आवश्यक है।

डॉ. आर. पी. शर्मा
अस्पताल
सिविल अस्पताल से रिटायर्ड सीनियर सर्जन
सभी आप्रेशन एवं नार्मल डिलीवरी सबसे सस्ते रेट में किए जाते हैं।
सभी आप्रेशन बिना टाँके के भी किए जाते हैं।
कॉपर-टी की सुविधा उपलब्ध है।
गर्भवती महिलाओं के लिए OPD फीस फ्री
पता : मिनी बाईपास रोड़, CR Resort के सामने, भिवानी
सम्पर्क सूत्र : 9416296903, 8168362612

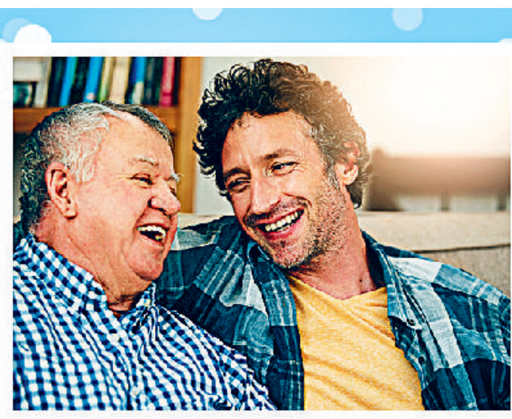

वर्ल्ड लाफ्टर डे स्पेशल

इस बात से शायद ही कोई असहमत होगा कि आज के दौर में हंसना सबसे कठिन होता जा रहा है। जबकि कई स्टडीज से साबित हुआ है और हेल्थ स्पेशलिस्ट भी मानते हैं कि हंसने से अनेक शारीरिक, मानसिक लाभ मिलते हैं। यही नहीं हंसने वाले लोग हर तरह की परेशानियों को बेहतर तरीके से हैंडल भी कर लेते हैं। तो आप भी जी भर हंसिए-खिलखिलाइए।

हर परेशानी को भुलाकर हंसिए-खिलखिलाइए

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

कभी-कभी यूं ही बेवजह हंसी आ जाती है
जैसे किसी पुराने दोस्त ने
बिना कहे याद कर लिया हो।
जैसे मां ने सिर पर हाथ रखकर कहा हो
सब ठीक है बेटा।
जैसे किसी शाम हवा ने अचानक खुशबू ला दी हो
जो बचपन में बगिया से आती थी।
कभी-कभी यूं ही बेवजह हंसी आ जाती है
और तब लगता है
जिंदगी इतनी भी मुश्किल नहीं...।

-गुलजार

जी हां, इस व्यस्त और तनावभरी जिंदगी में हाल के दशकों में हमने हंसी के बहुत सारे फायदे सुने, जाने और महसूस किए हैं। इसलिए हर साल मई माह के पहले रविवार को मनाया जाने वाला विश्व हास्य दिवस, हर गुजरते साल के साथ दिन दूनी, रात चौगुनी रफ्तार से लोकप्रियता की सीढ़ियां चढ़ रहा है।

बेसब्री से लोग करते हैं इंतजार: साल 1998 से मनाया जाने वाला यह हास्य दिवस, कुछ गिने-चुने अंतरराष्ट्रीय दिवसों में से है, जिसका लोग महीनों से इंतजार करते हैं। हालांकि यह इंतजार तो एक बहाना होता है, इसके पीछे छिपी असली बात यह है कि आज हंसी की महत्ता सर्वसिद्ध हो चुकी है। यही वजह है कि आज हास्य दिवस अपनी उपस्थिति से विश्व शांति और वैश्विक चेतना को बढ़ावा दे रहा है। यह दिन हम सबकी जिंदगी के तनाव को कम करता है, मूड को बेहतर करता है, जितनी भी हो सके जीवन को सकारात्मकता देता है। भला इस महंगाई के दौर में हंसी से ज्यादा फायदे का सौदा और क्या हो सकता है, जिसमें एक्सरसाइज भी हो, दवा भी हो और मेडिटेशन भी। हंसने से ये तीनों चीजें एक ही समय भरपूर और पूरी तरह से मुफ्त मिलती हैं। बावजूद इसके हंसना इतना आसान नहीं है, कुदरत की यह दौलत हर किसी को नहीं मिलती। तभी तो प्रेमलाल शिफा देहलवी ने कहा है-

या तो दीवाना हंसे या तुम जिसे तौफीक दो
वर्ना इस दुनिया में रहकर मुस्कुराता कौन है

केवल हंसी नहीं लाफ्टर योगा: साल 1998 में भारत के एक चिकित्सक डॉ. मदनलाल कटारिया ने हास्य दिवस की शुरुआत की थी। उनके मुताबिक यह अपने आपमें एक योग है, इसलिए हास्य को 'लाफ्टर योगा' माना जाता है। हंसना, सेहत के लिए रामबाण है। हंसने से शरीर में खून बढ़ता है, हंसने से हमारे शरीर में एंडोर्फिन, डोपामिन और सेरोटोनिन जैसे हैप्पी हार्मोंस रिलीज होते हैं। ये वही हार्मोन या रासायनिक स्राव हैं, जो हमारे दुखों, तकलीफों को चुटकी बजाकर गायब कर देते हैं और हम तरोताजा हो उठते हैं। ये हार्मोन हमारे मूड को बेहतर करते हैं, हमें हल्का-फुल्का महसूस कराते हैं। इसलिए वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि हंसी तनावनाशक है। यह तनाव पैदा करने वाले हार्मोन जैसे कि कॉर्टिसोल का खात्मा करता है।

अनेक देशों में हो रहा पॉपुलर: करीब 27 वर्ष पहले शुरू हुआ लाफ्टर डे, आज दुनिया के 72 से ज्यादा देशों में मनाया जाता है, इसके पीछे उद्देश्य है गोला-बारूद और व्यापार युद्ध से झुलस रही दुनिया में भाईचारा और सद्भावना बढ़े। इस हास्य योगा मुहिम के जरिए लोग आपस में खुशियां बांटना चाहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि अगर उनकी तरह ही उनके आस-पास रहने वाले लोग भी हंसेंगे तो खुश रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे, सकारात्मक रहेंगे और एक-दूसरे के काम आएंगे। यही वजह है कि आज भारत ही नहीं, दुनिया के अनेक देशों में लोग पार्कों में मॉर्निंग वॉक करते हुए समूहबद्ध होकर हंसने, खिलखिलाने की खूब कोशिश करते हैं। इसीलिए हास्य दिवस की प्रासंगिकता और इसकी स्वास्थ्य संबंधी महत्ता दिन पर दिन बढ़ती जा रही है।

दिल की बीमारियां रहती हैं दूर: हंसना सिर्फ हमारे शरीर में अच्छा अनुभूत होने वाला रासायनिक परिवर्तन ही नहीं करता। यह हमें शारीरिक रूप से भी स्वस्थ करता है। हंसना एक कार्डियो एक्सरसाइज है। हंसने से हमारे दिल की धड़कनें तेज होती हैं, हंसी फेफड़ों तक ज्यादा ऑक्सीजन पहुंचाती है, एक अच्छी हंसी हमारे ब्लड प्रेशर को संतुलित रखती है। अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन का मानना है कि 10-15 मिनट की रोजाना की हंसी हमारी 30 से 40 प्रतिशत तक दिल की बीमारी की आशंका कम कर देती है। हालांकि इसके साथ कुछ और कारक भी होते हैं, लेकिन दिल की सेहत के लिए हंसना बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि हंसने से हमारा इम्यून सिस्टम भी मजबूत रहता है, शरीर की कोशिकाएं सक्रिय रहती हैं, एंटीबॉडीज का उत्पादन लगातार बढ़ता है और यह शरीर को बीमारियों से लड़ने में मजबूत बनाता है।

परेशानियों से दिलाए छुटकारा: कभी-कभी लगता है कि जैसे आज पूरी दुनिया में हंसी के विरुद्ध कोई अघोषित युद्ध चल रहा है। अगर गौर से देखें तो दुनिया की ज्यादातर हरकतें, लोगों के हंसने यानी खुश रहने के विरुद्ध हैं। दुनिया में बढ़ती महंगाई, बढ़े हुए काम के घंटों से व्याप्त तनाव, वर्क फ्रॉम होम के कारण घरों तक चला आया दफ्तर का तनाव, सोशल मीडिया पर होने वाले टेंशनफुल कमेंट्स, वीडियोज और न जाने ऐसी कौन-कौन सी हमारी रोजमर्रा की गतिविधियां हैं, जो कि हमें हंसने नहीं देतीं। हर समय डिप्रेशन और डिजिटल टॉक्सिंस में डुबोए रखती हैं। हंसी इन सबकी अकेली ऐसी काट है, जो हमें इन सब परेशानियों से छुटकारा दिलाती है और डिजिटल जहर को भी बड़ी आसानी से डिटॉक्स कर देती है। इसीलिए दुनिया की अनगिनत परेशानियों से अगर कोई एक ताकत हर समय मजबूती से लड़ते हुए दिखती है, तो वह हंसी ही है। लोमा लिंडा यूनिवर्सिटी के एक शोध में यह सिद्ध हुआ है कि जो लोग नियमित तौर पर कॉमेडी वीडियो देखते हैं, वो परेशानियों से अच्छी तरह से निपट सकते हैं और उनके शरीर की इम्यून प्रतिक्रिया उन लोगों से बेहतर होती है, जो हमेशा गंभीर और तनाव की मुद्रा में रहते हैं। यह अकारण नहीं है कि सोशल मीडिया हो या पारंपरिक टीवी मीडिया, सबसे ज्यादा हंसी ही बिकती है, सबसे ज्यादा कॉमेडी शोज ही देखे जाते हैं। *

कारगर हो रही लाफ्टर थेरेपी

हम सब इस बात से अवगत हैं कि हाल के सालों में जिस तरह से हमारी लाइफस्टाइल ज्यादा व्यस्त, ज्यादा आत्मकेंद्रित हुई है, उसी तरह से हम पर कई तरह के मानसिक अवसादों और विकारों ने हमला किया है। आप यकीन मानिए, आज दुनिया में मानसिक स्वास्थ्य की सबसे असरदार और सबसे सटीक दवा हंसना ही है। पूरी दुनिया में डॉक्टर लाफ्टर थेरेपी को मानसिक स्वास्थ्य के लिए सबसे कारगर दवा मानते हैं। इसे ह्यूमर थैरेपी कहा जाता है और आज यह भारत में बड़े-बड़े संगठनों और कॉरपोरेट मीटिंग्स का हिस्सा बन गया है। अमेरिका से लेकर यूरोप तक आज ह्यूमर थैरेपी या लाफ्टर क्लब 10 बिलियन डॉलर से बड़ा बिजनेस बन चुकी है। इसलिए अगर कोई कहे कि हंसने से क्या मिलता है, तो कहिए यह एक्सरसाइज है, मेडिसिन है और मेडिटेशन भी है यानी थ्री इन वन है। जो हमें खुशी देती है और रोमांचित करती है।

आमतौर पर हंसने को सामान्य शारीरिक-मानसिक गतिविधि माना जाता है। लेकिन हास्य को योगा का स्वरूप देकर पूरी दुनिया में पॉपुलर बनाने वाले डॉक्टर मदन कटारिया ने इसे स्वस्थ-खुशहाल जीवन की कुंजी बना दिया है।

हंसना-योगा साथ-साथ सिखाने वाले डॉ. मदन कटारिया

पर्सनालिटी
शैलेंद्र सिंह

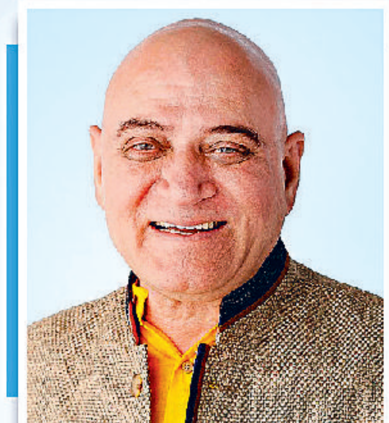

डॉक्टर मदन कटारिया, जिन्हें 'लाफ्टर गुरु' या 'गिगलिंग गुरु' के नाम से भी जाना जाता है, को अगर आधुनिक भारत का हास्य योगाचार्य कहें तो किसी को आश्चर्य नहीं होगा। पारंपरिक योग की तरह ही आज पूरी दुनिया में हास्य योग की लोकप्रियता भी बढ़ती जा रही है। इसे पॉपुलर बनाने में सबसे बड़ी भूमिका रही है डॉक्टर मदन कटारिया की।

31 दिसंबर 1955 को महाराष्ट्र के एक गांव में पैदा हुए मदन कटारिया ने साल 1979 में गुरुनानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर से मेडिकल स्नातक की डिग्री हासिल की और एक सामान्य चिकित्सक की तरह मुंबई के एक अस्पताल में प्रैक्टिस करने लगे। लेकिन उसी दौर से वे मानने लगे थे कि हास्य एक औषधि के रूप में हमें स्वस्थ रखने में सहायक हो सकती है। जिसका सार यह था कि हंसी शरीर में एंडोर्फिन बढ़ाती है और तनाव कम करती है। डॉ. कटारिया को इन शोध ने गहराई से प्रभावित किया। हालांकि यह रिसर्च मूलरूप से उनकी नहीं थी, उन्होंने भी इसे किसी विश्वविद्यालय की रिसर्च के रूप में पढ़ा था, लेकिन इसे पढ़कर उन्हें खुद बहुत खुशी मिली थी और तभी उन्होंने तय कर लिया था कि वह इसे एक चिकित्सा पद्धति के रूप में विकसित करेंगे। इस तरह अपने मन में पल रहे लक्ष्य को पूरा करने में वह जुट गए।

ऐसे हुई शुरुआत: 13 मार्च 1995 को डॉ. मदन कटारिया ने मुंबई में अंधेरी वेस्ट के लोखंडवाला पार्क में महज 5 लोगों के साथ हंसी के स्वास्थ्य लाभों पर आधारित लाफ्टर क्लब की शुरुआत की थी। आज दुनिया के लगभग 120 देशों में लाफ्टर क्लब्स, जिनकी संख्या 6 हजार से ऊपर है, चल रहे हैं। पूरी दुनिया उन्हें न सिर्फ लाफ्टर गुरु बल्कि हंसी को अमृत चिकित्सा में बदल देने वाला डॉक्टर मानते हैं।

जान लिया था हंसी का रहस्य: वास्तव में अपनी युवावस्था में ही डॉ. कटारिया ने यह रहस्य पा लिया था कि हंसी महज इंसानी गतिविधि भर नहीं है बल्कि यह अपने आप में इंसान को कुदरत से मिला वरदान है। इसलिए उन्होंने आज के इस व्यस्त और तनावग्रस्त दुनिया में ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए इसे एक आंदोलन का रूप दिया, जो आज पूरी दुनिया में लाफ्टर मूवमेंट के नाम से जाना जाता है। डॉ. कटारिया का लाफ्टर क्लब की स्थापना के पीछे एक सीधा सा विचार था कि हंसी, दुनिया की सबसे अच्छी दवा है। यदि लोग बिना किसी चुटकुले या कॉमेडी सुने-देखे भी हंसते हैं तो उन पर इस हंसी का सकारात्मक असर पड़ता है।

शुरू किया हास्य योगा: जब डॉ. कटारिया ने देखा कि लोगों को उनकी बातों में आकर्षण महसूस हो रहा है तो उन्होंने अपने इस हंसी योग में सांस लेने की तकनीक को भी शामिल किया और इसे प्राणायाम के साथ जोड़ लिया। जिस कारण आज हास्य योग, बेहद वैज्ञानिक योग में परिवर्तित हो चुका है। हास्य योग हंसने की एक ऐसी वैज्ञानिक विधि है, जो लाफ्टर योगा के रूप में दुनिया के सामने आई है। डॉ. कटारिया ने इस हास्य योग को एक सुप्रबंधित वैज्ञानिक प्रक्रिया में बदलने के लिए हास्य पर कई किताबें भी लिखी हैं, जिनमें सबसे प्रमुख है- लाफ फॉर नो रीजन। उन्होंने टेड टॉक्स, बीबीसी और नेशनल जियोग्राफिक जैसे कई अंतरराष्ट्रीय चैनलों में अपने इस हास्य योग के संबंध में लंबे व्याख्यान भी दिए हैं। हंसने को लेकर उनका एक प्रेरणाप्रद विचार है, 'हम हंसते नहीं क्योंकि हम खुश हैं, हम खुश होते हैं, क्योंकि हम हंस सकते हैं।'

ईजाद की नई तकनीक: वास्तव में आज पूरी दुनिया, हंसने को खुश और संतुष्ट रहने का साइंस मानती है। लेकिन शुरू में जब डॉ. मदन कटारिया मुंबई के पार्कों में लोगों को हंसी का महत्व बताया करते थे, तो लोग उनकी बात को मजाक मानकर एक कान से सुनते और दूसरे कान से निकाल देते थे। फिर भी डॉ. कटारिया अपने इस मिशन से पीछे नहीं हटे। कुछ समय बाद डॉ. मदन कटारिया ने जान-बूझकर हंसने यानी सिमूलेटिड लाफ्टर तकनीक विकसित की, जो आज एक योग के प्रारूप में लोगों द्वारा हर दिन अभ्यास की जाती है। लाफ्टर योगा केवल भारत में ही नहीं रुका बल्कि इसकी ख्याति देखते ही देखते साल 2023 तक 110 देशों में फैल चुकी थी। साल 2023 में ही पूरी दुनिया में लाफ्टर योगा कराने वाले क्लबों की संख्या 6 हजार से ज्यादा हो चुकी थी। आज हंसाने वाले उनके ये क्लब स्कूलों, वृद्धाश्रमों, जेलों और मल्टीनेशनल कंपनियों तक में चलते हैं और डॉक्टर मदन कटारिया को आज की दुनिया का हास्य गुरु बनाते हैं। *

हास्य कविता
हरीश कुमार 'अमित'

इक आम न मिलता

कुछ लोगों को काम न मिलता,
लेकिन हमको आराम न मिलता।
दफ्तर की कुर्सी पे दो घंटे,
सोने का इंतजाम न मिलता।
भर-भर थैले फल घर लाऊं,
खाने को इक आम न मिलता।
भरा कबाड़ से है घर सारा,
बेचूं कैसे, सही दाम न मिलता।
पन्ने भर-भर लिखी शायरी,
पर हमको कभी नाम न मिलता।

दर्द-ए-सिर भला भागे कैसे,
ढूंढे पर भी बाम न मिलता।
प्रेम पत्र तो अनगिन भेजे,
उत्तर में पैगाम न मिलता।
खूब लगाते मक्खन अफसर को,
फिर भी कोई ईनाम न मिलता।
रोज न पड़ती डांट अफसर की,
सुबह जो ट्रैफिक जाम न मिलता।
उधार चुकाने वाला हमको,
किसी सुबह, किसी शाम न मिलता।

व्यंग्य
अंशुमाली रस्तोगी

कुछ तो लोग कहेंगे

किसी को कुछ भी कह देना, हम भारतीयों की जन्मजात फितरत रही है। चाहे सामने वाले से मतलब हो या न हो, फिर भी उसके बारे में हम कुछ भी कहने की छूट ले ही लेते हैं और, किसी के बुरा मानने की तो हम परवाह ही नहीं करते।

कुछ लोग कहते हैं। लेकिन क्यों कहते हैं, वे भी नहीं जानते। कहना उनकी आदत है। कहना उनकी बीमारी है। नहीं कहेंगे तो उनका दो वक्त का खाना हजम नहीं होगा। जुबान में अटकाहट-सी महसूस होगी। पेट में किसिम-किसिम की मरोड़ें पैदा होंगी।

किसी को कुछ भी कह देना, हम भारतीयों की जन्मजात फितरत रही है। चाहे सामने वाले से मतलब हो या न हो, फिर भी उसके बारे में हम कुछ भी कहने की छूट ले ही लेते हैं और, किसी के बुरा मानने की तो हम परवाह ही नहीं करते। परवाह करने लगे तो जमीर टोकेगा कि क्या हो गया है तुम्हें!

वैसे, लोगों के कुछ भी कहने पर एक शोध अवश्य होना चाहिए। आखिर पता तो लगे कि लोग क्यों कुछ भी कह देते हैं? अपने निजी अनुभव के आधार पर कह रहा हूं कि कहने वालों में सबसे बड़ी तादाद पढ़े-लिखे लोगों की होती है। पढ़ी-लिखी जमात ऐसा मानती है कि वो कुछ भी कहने के लिए स्वतंत्र है। अच्छा देखेगी तो कुछ कहेगी। खराब देखेगी तो कुछ कहेगी। गंदा देखेगी तो कुछ कहेगी। महसूस करेगी तो कुछ कहेगी। मतलब, उसे हर वक्त कुछ न कुछ कहना ही है, कहने को वो अपनी शान समझती है। कभी खामोश नहीं रहती। उसके आगे तो प्रायः कैंची भी फेल हो जाया करती है। अकसर सोचता हूं कि यह जमात आखिर ऐसा क्या खाती है, जो कुछ भी कहती रहती है हर वक्त!

जानते हैं, मुझसे लोग इसलिए परेशान रहते हैं कि मैं कभी कुछ क्यों नहीं कहता? मुझे कुरेदते हैं, मुझे उलहाना देते हैं। मुझे लालच तक देते हैं, लेकिन मैं कभी कुछ नहीं कहता। कुछ न कहना, मेरी फितरत में शामिल हो चुका है।

लेखक लोग अपनी किताबें मुझे भेजते हैं। फिर कहते हैं कि मैं उन पर कुछ कहूं। जब कुछ नहीं कहता तो बुरा मान जाते हैं। मुझे मनघुन्ना तक साबित कर देते हैं। तब भी मैं उनसे कुछ नहीं कहता। सोचता हूं कि क्या कहूं? कहने वालों की भीड़ में एक शख्स ऐसा भी तो होना चाहिए, जो कुछ न कहे। कहने वालों को और कहने वालों की, सिर्फ सुने। यही तो मैं करने की कोशिश किया करता हूं। किंतु लोग हैं कि बुरा मान जाते हैं। मेरे कुछ न कहने को 'अदरवाइज' ले लेते हैं। अब जो ले लेते हैं तो लें, मैं ऐसा ही हूं! क्या करूं।

यू नो, लोगों के पास बहुत समय है, लेकिन दूसरों के लिए नहीं, आपस में मिलने-जुलने और बतियाने के लिए नहीं, कुछ भी किसी को भी कहने और लंबी-लंबी बेतुकी चर्चाओं के लिए। कुछ भी कहने के मामले में सोशल मीडिया का हाल सबसे बुरा है। किसी के पन्ने या दीवार पर जैसे ही दस्तक दीजिए, कुछ न कुछ आड़ा-तिरछा कहता हुआ ही मिलेगा। यहां लोग सार्थक बहुत कम लिखते या कहते हैं, ज्यादातर सिर्फ खुन्नस निकालते हैं। वे इसी में खुश हैं, उन्हें लगता है कि ऐसा कर वे बहुत महान काम कर रहे हैं। महान लोगों से सोशल मीडिया का मंच खदबदा रहा है।

आज की तारीख में कुछ भी कहना, दुनिया भर में एक लाइलाज बीमारी-सी बनती जा रही है। जुबान कैंची से अधिक खतरनाक हो चली है। दिल फरेबी हो गए हैं, आंखें शातिरता का पैमाना बन गई हैं। मन कुटिलता में तब्दील होते जा रहे हैं। भावना, संवेदना, सहनशीलता, इंसानियत की बातें किताबों में ही सिमट कर रह गई हैं। अच्छा और मीठा कहते-बोलते लोग कम मिलते हैं। तरह-तरह के उपदेश, प्रवचन और ज्ञान हर किसी के पास बहुत है, मगर व्हाट्सएप के स्टेटस पर चढ़ाने के लिए ही।

कम बोलते लोग मुझे भाते हैं। उनसे ही बोलना मुझे अच्छा भी लगता है। उनके बीच जाकर मुझे सुकून मिलता है। इसीलिए मैं भी कम ही कहता और बोलता हूं ताकि फिजा में प्रदूषित शब्दों का जहर कम घुल सके। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेमचंद की व्यंग्य कथाएं

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि विगत लगभग एक सदी में मुंशी प्रेमचंद हिंदी के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले कथाकार हैं। इसकी वजह है कि जीवन के लगभग हर पक्ष और संवेदना पर उन्होंने मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनकी लगभग 300 कहानियों में से 15 व्यंग्यात्मक कहानियों का संकलन 'प्रेमचंद की व्यंग्य कथाएं' हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इसमें हम (मोटेराम जी शास्त्री, शादी की वजह, दो बैलों की कथा, निमंत्रण, सत्याग्रह, रसिक संपादक, गुरुमंत्र, स्वांग) समेत कई ऐसी मशहूर कहानियां पढ़ सकते हैं, जिसमें समाज, राजनीति, व्यवस्था में व्याप्त विद्रूप और इंसानी चरित्र की निकृष्टता और उसके दोहरेपन पर कटाक्ष किया गया है। इनमें प्रेमचंद बेहद सहजता से चुटकी लेकर पाठक को बहुत कुछ सोचने पर विवश करते हैं। आमतौर पर जीवन की विडंबनाओं से उपजने वाली तकलीफ और करुणा को अपनी कहानियों का विषय बनाने वाले प्रेमचंद की व्यंग्य कथा-लेखक की भी छवि, इन कहानियों से निर्मित होती है। पुस्तक की भूमिका में संपादक ने उचित ही कहा है, 'प्रेमचंद की इन कहानियों में जीवन के अनेक रंग हैं, जो सहज हास्य और शिष्ट व्यंग्य की पगडंडी पर दौड़ते दिखते हैं।' *

पुस्तक: प्रेमचंद की व्यंग्य कथाएं, **संपादन:** पल्लव,
मूल्य: 250 रुपए, **प्रकाशक:** राजपाल एंड संस, दिल्ली

रचनाएं आमंत्रित...

हिंदी दैनिक हरिभूमि के फीचर पृष्ठों (रविवार भारती, सहेली, बालभूमि और सेहत) में प्रकाशनार्थ आलेख, छोटी कहानियां, कविताएं, व्यंग्य, बाल कथाएं आमंत्रित हैं। लेखकों से अनुरोध है कि अपनी रचनाएं कृतिदेव या यूनिकोड फॉन्ट में हमें ईमेल आईडी haribhoomifeaturedep@gmail.com पर मेल करें।

अनछुई-सी प्राकृतिक सुंदरता मनमोहक वादियों में समेटे लैंढौर

अगर आप आधुनिकता, भीड़-भाड़ और शोर-शराबे से दूर किसी शांत, स्वच्छ, मनोरम पर्यटन स्थल की सैर करना चाहते हैं तो मसूरी से थोड़ी ही दूरी पर स्थित लैंढौर आपके लिए परफेक्ट ट्रैवल डेस्टिनेशन हो सकता है। लैंढौर की लाजवाब नजारों की आंखों देखी अनुभूतियां लेखक साझा कर रहे हैं, अपनी जुबानी।

पर्यटन स्थल
समीर चौधरी

गर्मी के मौसम में गर्मी का अहसास तो सभी को होता है लेकिन मुझे सामान्य से अधिक गर्मी लगती है। इसलिए जैसे ही गर्मियां दस्तक देने लगती हैं, मैं यूरोप यात्रा पर निकलने की प्लानिंग करने लगता हूं। अगर किसी वजह से स्वीडन या स्विटजरलैंड जाने की योजना न बन पाती तो उत्तर भारत के हिल स्टेशनों का रुख तो जरूर कर लेता हूं। इस बार मैं नॉर्थ इंडिया के मनमोहक लेकिन कुछ अलग और छोटे से हिल स्टेशन लैंढौर पहुंच गया।

लैंढौर पहुंचना है आसान

मैंने दिल्ली से फ्लाइट पकड़ी और देहरादून के जॉलीग्रांट हवाई अड्डे पर उतरा। वहां से टैक्सी के जरिए पहले लगभग 60 किमी का सफर तय करके मसूरी पहुंचा। मसूरी से लैंढौर मात्र 7 किमी के फासले पर है। हालांकि भारत के सभी प्रमुख शहरों से देहरादून के लिए सीधी फ्लाइट मिल जाती है, लेकिन अगर आप रेल या सड़क मार्ग से आना चाहें तो भी देहरादून के लिए दिल्ली से सीधी रेल और बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं। मुंबई आदि महानगरों से भी देहरादून के लिए सीधी रेल मिल जाती हैं।

आधुनिकता से अछूता प्राकृतिक सौंदर्य

लैंढौर की प्राकृतिक सुंदरता, ठंडी जलवायु और शांत वातावरण से लबरेज है। यह स्थान मसूरी से औसतन 984 फीट ऊपर स्थित है। लैंढौर का अधिकतर हिस्सा तिब्बत को फेस करता है। यहां तापमान अमूमन मसूरी से 2-3 डिग्री सेंटीग्रेड कम रहता है। अगर आप मेरी तरह अनदेखे प्राकृतिक सौंदर्य और शांति की तलाश में रहते हैं तो लैंढौर अवश्य जाएं। यह एक ऐसा हिल स्टेशन है, जहां लोगों की भीड़ बहुत कम ही नजर आती है। लैंढौर की सड़कों पर न शोरगुल है और न ही दुकानों की भीड़। अंग्रेजी राज का बसाया हुआ यह हिल स्टेशन आधुनिकीकरण से अछूता है। यहां पर्यटक भी कम ही आते हैं, लेकिन जो आते हैं वे इसकी सुंदरता के कायल हो जाते हैं। लैंढौर की खूबसूरती ने तो मुझे इतना मंत्रमुग्ध कर दिया कि मेरी इच्छा स्थायी तौर पर यहीं बसने की हो रही है, लेकिन व्यावसायिक मजबूरियां ऐसा फैसला करने से मुझे रोक देती हैं।

क्यों है इतना अलग

मसूरी जैसे व्यस्त शहर के इतने करीब स्थित होने के बावजूद लैंढौर शांत, अनदेखे और अछूते आकर्षणों से भरा हुआ है। यह सवाल किया जा सकता है कि मसूरी के इतने करीब होने के बावजूद लैंढौर इतना अलग क्यों है? दरअसल, लैंढौर हमेशा से ही छावनी क्षेत्र का हिस्सा रहा है। इसलिए पिछले 100 वर्षों से लैंढौर में पेड़ों या वनों की कटाई नहीं हुई है। लैंढौर में किसी भी प्रकार का नया निर्माण गैर कानूनी है। इन नियमों के कारण आधुनिकीकरण और पर्यटन ने लैंढौर को स्पर्श नहीं किया है। लैंढौर में समय जैसे रुका हुआ लगता है। लेकिन यही अच्छी बात है क्योंकि इसी वजह से लैंढौर अपनी सुंदरता और स्वच्छ वातावरण को बचाए रखने में सफल हो सका है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि देश की आजादी के समय लैंढौर में मात्र 24 मकान थे और आज भी लैंढौर में 24 ही मकान हैं।

कैसे नाम पड़ा लैंढौर

दक्षिण पश्चिम वेल्स के कार्मार्थेंशायर में एक गांव है 'लैंडडोरोर', इसी गांव के नाम पर इस स्थान का नाम 'लैंढौर' रखा गया है। ब्रिटिश राज के दौरान यह आम बात थी कि ब्रिटिशर्स अपने घरों को या अपने बसाए नगरों या स्थानों को इंग्लिश, स्कॉटिश, वेल्स या आयरिश नाम दिया करते थे। यह एक तरह से उनके लिए अपनी देशजता को अभिव्यक्त करने का माध्यम था।

लैंढौर के प्रमुख आकर्षणों में से एक–सुर्खंदा देवी मंदिर

लैंढौर के आकर्षण

मानसून में लैंढौर में लगभग हर दिन बारिश होती है। बरसात से पहले अप्रैल-मई में गर्मी रहती है। दिसंबर से फरवरी तक कड़ाके की सर्दी रहती है। जाड़ों में यहां 3 से 15 बार बर्फबारी होती है। लैंढौर में बर्फ मसूरी से ज्यादा पड़ती है और उससे देर में पिघलती है। लैंढौर के पूरब में छोटा सा गांव धनौल्टी है और सुर्खंदा देवी मंदिर भी है। यहां कनातल है, जो अब टिहरी बांध में डूब गया है, चंबा (हिमाचल प्रदेश के चंबा से अलग) भी देखने योग्य है। लैंढौर के पश्चिम में पर्यटकों को आकर्षित करता कैंपटी फाल्स है और चकराता नामक सैन्य कस्बा भी है। विख्यात लेखक रस्किन बॉण्ड लैंढौर में ही रहते हैं। *

क्या आप तनाव और उदासी से बचना चाहते हैं? क्या आप स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से दूर रहना चाहते हैं? तो आपको खुश रहने के साथ खूब हंसना होगा। इसके लिए आप लाफ्टर योगा को अपने डेली रूटीन में शामिल कर लीजिए।

हमेशा रहेंगे हेल्दी-हैप्पी
डेली करें लाफ्टर योगा

लाइफस्टाइल
दिव्यज्योति 'नंदन'

आपने विभिन्न प्रकार के आसनों और योगाभ्यास के बारे में जरूर पढ़ा और सुना होगा। आपमें से कुछ लोग डेली योगाभ्यास करते भी होंगे। लेकिन क्या आप लाफ्टर योग की भी प्रैक्टिस करते हैं? यह कोई क्लासिक योगाभ्यास नहीं है बल्कि तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए एक मशहूर भारतीय डॉक्टर मदन कटारिया द्वारा विकसित हंसने के जरिए किया जाने वाला एक व्यायाम है, जिसे लाफ्टर योगा या शॉर्ट में एलवाई कहते हैं।

क्या है लाफ्टर योगा: लाफ्टर योगा वास्तव में किसी तरह का कोई कॉमेडी सेशन नहीं है। इसलिए इस बात का फर्क समझें की हंसोड़ होना और लाफ्टर योगा में पारंगत होना या नियमित रूप से उसे करना दोनों एक बात नहीं है। लाफ्टर योगा दरअसल हंसने और खुश रहने का एक ऐसा कार्यक्रम है, जिसमें आप बिना कोई हास्य चुटकला सुने या किसी पर मजाकिया कमेंट किए बिना भी हंस सकते हैं। लेकिन यह सिर्फ कहने भर से नहीं हो जाता, इसके लिए नियमित रूप से एलवाई का अभ्यास किया जाता है।

है बहुत फायदेमंद: यह कितना फायदेमंद है, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज दुनिया के 110 देशों में लाफ्टर योगा का चलन है और पूरी दुनिया में करीब 6000 से ज्यादा लाफ्टर योगा को प्रमोट करने वाले लाफ्टर क्लब चल रहे हैं, जो इस योगा की जरूरत को तो पूरा करते ही हैं, यह भी बताते हैं कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है? यह हास्य योग, इस कदर शरीर के लिए स्वास्थ्यप्रद और महत्वपूर्ण है कि अगर हम हर दिन 15 मिनट तक हास्य योग करते हैं तो न सिर्फ हम खूब स्वस्थ रहते हैं बल्कि हर तरह के तनाव और जीवनशैली संबंधित बीमारियों से पूरी तरह से बचे रह सकते हैं। हास्य योग सिर्फ मानसिक संतुलन बनाए रखने और खुश रहने भर का ही जरिया नहीं है। नियमित किए जाने वाले हास्य योग से हम कई तरह के रक्तविकारों आदि से भी छुटकारा पा लेते हैं। दरअसल, भारत की सामाजिक विडंबनाओं और मानसिक अवसाद की स्थितियों से जब हास्य योग अपने ढंग से जंग लड़ता है, तब पता चलता है कि यह हमारे तन और मन दोनों के लिए कितना उपयोगी और कारगर है?

ऐसे बनती है अमृत हंसी: सिर्फ चाहने भर से हमारी हंसी हमारे हर तरह की परेशानियों का शमन करने वाले वाली अग्नि नहीं बनती। इसके लिए कई तरह की कोशिशें करनी होती हैं। लाफ्टर योगा या हास्य योग हंसने की एक ऐसी अनूठी शैली है, जिसमें स्वेच्छा से हंसना शामिल है। धीरे-धीरे यह हंसना ऐसे योगाभ्यास में बदल जाता है, जो न सिर्फ हमारे शरीर को चुस्ती फुर्ती और गतिशीलता प्रदान करता है बल्कि यह हमें हर तरह की सकारात्मक ऊर्जा से भी लबालब कर देता है। महज दिल खोलकर हंसने के कारण हमारे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और हमारे शरीर में ऐसे हार्मोंस का उत्पादन होता है जो कि हमारी सोच की मनोदशा को बदल देते हैं। इससे हम खुद ही अनगिनत तरह के मानसिक विकारों से खुद को दूर रख पाते हैं, लेकिन हमें ऐसी अमृत हंसी मिले, इसके लिए हमें भी कुछ नियमित अनुशासन बरतने होते हैं।

जब हम जोर-जोर से हंसते हैं तो हमारे शरीर के हर हिस्से तक ऑक्सीजन पहुंचती है। यही ऑक्सीजन हमारे शरीर के मैगनेटिक ताकत देता है। जब हम सुबह या शाम खुले वातावरण में दिल से सकारात्मक होकर अकेले या कुछ लोगों के साथ मिलकर जोर-जोर से हंसते हैं, भले यह स्वाभाविक हंसी न हो बल्कि स्वाभाविक तरह से हंसने भर कोशिश हो, तो भी हमें इससे फायदे मिलते हैं। इस प्रक्रिया से शरीर में कई तरह के रासायनिक बदलाव होते हैं और इन बदलावों के चलते शरीर में रासायनिक स्राव होते हैं, जो हमें खुश रखते हैं। इससे हम अपने ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखते हैं।

कैसे करें एलवाई: लाफ्टर योग में भले बहुत शारीरिक गतिविधियां न शामिल हों, बावजूद इसके लाफ्टर योग के सही तरीके से करने से शरीर के ज्यादातर अंगों को फायदा मिलता है। जब हम बिना मतलब जोर-जोर के ठहाके लगाते हैं तो इनसे हम झूम जाते हैं। क्योंकि इनसे हमें बहुत तरह की नई खुशियां और नए खुशियों के कारण मिलते हैं। अगर हम नाच गाकर खुश रह सकते हैं, तब तो इसे करना और भी आसान है। कुल मिलाकर हास्य योग एक बेहद सरल योगाभ्यास है और स्वस्थ रहने के लिए इसे हर किसी को करना चाहिए। *

अगर आपसे कहा जाए कि हम इंसान ही नहीं आसमान के ग्रह, उपग्रह भी कभी-कभार मुस्कुराते हैं तो शायद यकीन नहीं करेंगे। लेकिन ऐसा ही एक अनोखा नजारा पिछले सप्ताह देखने को मिला।

आसमान में दिखा स्माइली फेस

खगोलीय घटना
रजनी अरोड़ा

हंसना-मुस्कुराना या दूसरे को हंसते-मुस्कुराते देखना, किसे नहीं भाता! दूसरों को हंसते देखकर मुस्कुराहट अपने आप ही हमारे होंठों पर भी आ जाती है और चेहरा खुशी से खिल उठता है। अगर बात हो दूर आसमान में मौजूद खगोलीय पिंडों की मुस्कुराहट भरी छवि देखने की तो निश्चय ही अचरज से भरा अहसास होगा। यह कोई मजाक नहीं, हाल ही में शुक्र, शनि ग्रह और चंद्रमा का ऐसा अद्भुत खगोलीय संयोग देखने को मिला, जिसने पूरी दुनिया के लोगों को अचंभे में डाल दिया।

नजर आया मुस्कुराता चांद: विगत 25 अप्रैल की सुबह, सूर्योदय से ठीक पहले, पूर्वी क्षितिज (इस्टर्न हॉरिजोन) की ओर खुले आसमान में देखने को मिली ब्रह्मांड की अनोखी मुस्कान। सुबह 4:45 बजे आसमान में शुक्र ग्रह सबसे पहले दिखना शुरू हुआ। 5 बजे शनि और चंद्रमा धीरे-धीरे दिखाई दिए। 5:30 बजे तीनों कुछ इस तरह एक-दूसरे के करीब आए कि स्माइली फेस का आकार दिखने लगा। सुबह 6:00 बजे तक यह नजारा दिखा, सूरज की रोशनी फैलने पर यह ओझल हो गया। इसे स्माइली मून, कॉस्मिक स्माइल या स्काई इमोजी भी कहा जाता है।

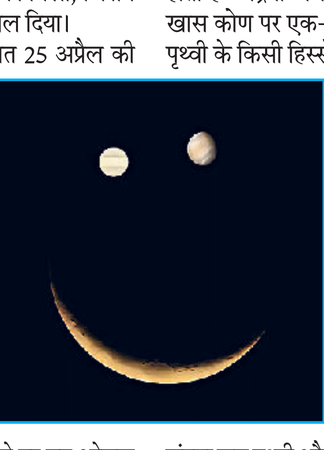

इस संयोग की खासियत: इस खगोलीय संयोग को खगोलशास्त्र में त्रिग्रही संयोग या ट्रिपल कंजंक्शन कहा जाता है। इस बार शुक्र (वीनस) और शनि (सैटर्न) खगोलीय ग्रह और अर्धचंद्राकार चंद्रमा (क्रैसेंट मून) ने मिलकर यह अद्भुत नजारा निर्मित किया था। सबसे बड़ी बात यह रही कि मुस्कुराते चांद की यह आकृति सीधी न होकर तिरछी (90 डिग्री कोण पर घूमी हुई) थी। शुक्र ग्रह सबसे ऊपर, शनि ग्रह उसके थोड़ा नीचे और दोनों के बीच चंद्रमा था। इन तीनों ने एक तिकोना (त्रिभुजाकार) पैटर्न क्रिएट किया, जिससे पृथ्वी से देखने पर स्माइली फेस की आकृति नजर आने लगी। इसके निर्माण में शुक्र ग्रह, जो हमारे सौर मंडल का सबसे चमकीला ग्रह है, (4.4 मैग्नीट्यूड) पर स्माइली फेस का दाहिनी आंख बना। वहीं हल्की चमक वाला शनि ग्रह, (1.2 मैग्नीट्यूड) के साथ इस स्माइली फेस में बाईं आंख की तरह दिखा।

इनके अलावा अर्धचंद्र के निचले 8 प्रतिशत हिस्से पर पृथ्वी की परावर्तित रोशनी के कारण स्माइल जैसी आकृति नजर आई। स्पेस के स्माइली फेस का यह अद्भुत और मनमोहक नजारा, दुनिया के कई देशों (जैसे- भारत, कनाडा, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और कई यूरोपीय देशों) में देखने को मिला। जिसका आनंद लोगों ने बिना किसी विशेष उपकरण के नंगी आंखों से उठाया। बाइनोक्युलर या टेलिस्कोप की मदद से इसे ज्यादा अच्छी तरह देखा जा सका।

छुपा है खगोलीय विज्ञान: वैज्ञानिक तौर पर देखा जाए तो इस खगोलीय संयोग के लिए तीन प्रमुख शर्तें होती हैं- चंद्रमा अर्धचंद्र हो। तीन खगोलीय पिंड एक खास कोण पर एक-दूसरे के पास आएं। यह संयोजन पृथ्वी के किसी हिस्से से एक विशिष्ट कोण पर दिखाई दे, तभी यह स्माइली फेस जैसा दिखता है। शुक्र, शनि और चंद्रमा का ऐसा ट्रिपल कंजंक्शन संयोग खगोलीय गणनाओं का एक सटीक उदाहरण है, जो सौर मंडल की गतिशीलता को समझने में मदद करता है। यह मूल रूप से चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करता है। पृथ्वी, सूर्य के चारों ओर घूमती है, चंद्रमा, पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है। चंद्रमा जब पृथ्वी और सूर्य के बीच थोड़ा कोण बनाकर तिरछा स्थित होता है, तब उसका केवल छोटा हिस्सा सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है। हमें यह अर्धचंद्र के रूप में दिखता है। यदि उसी समय शुक्र और शनि ग्रह, एक-दूसरे के समीप पश्चिमी या दक्षिण-पश्चिमी आकाश में स्थित हों, तो ये तीनों मिलकर एक स्माइली फेस का आकार बनाते हैं। नासा के खगोलविदों के अनुसार- चूंकि शुक्र ग्रह, सूर्य की एक परिक्रमा लगभग 225 पृथ्वी दिनों (यानी लगभग 0.6 वर्ष) में पूरा करता है। शनि ग्रह, सूर्य का चक्कर लगभग 29.4 पृथ्वी वर्षों में पूरा करता है। इसलिए ऐसा ट्रिपल कंजंक्शन संयोग दशकों में एक बार ही होता है।

पहले भी दिखा यह नजारा: 2025 से पहले वर्ष 2008 में (शुक्र, बृहस्पति और चंद्रमा का संयोग) और वर्ष 1990 (शनि, मंगल और चंद्रमा की त्रिकोणीय स्थिति) में ऐसे ही संयोग देखे गए थे। खगोलविदों की मानें तो स्माइली मून जैसी स्थिति अगले 10-15 वर्षों में फिर दिखाई दे सकती है, लेकिन संभव है उसका आकार और स्थिति भिन्न हो। *

जेमी लीवर ने अपने पिता मशहूर कॉमेडियन-एक्टर जॉनी लीवर के नक्शे कदम पर चलते हुए कॉमेडी और एक्टिंग को अपने करियर के रूप में चुना। इस फील्ड में उनका कैसे आना हुआ, पापा से उन्हें कितना सपोर्ट मिला, कॉमेडी को वे कितना ईजी या टफ मानती हैं? बातचीत जेमी लीवर के साथ।

कॉमेडी करना, लोगों को हंसाना बहुत मुश्किल टास्क है: जेमी लीवर

खास मुलाकात
पूजा सामंत

पिछले कुछ वर्षों से जॉनी लीवर की बेटी जेमी लीवर, टीवी, वेब शोज और फिल्मों में एक्टिव हैं। 'वर्ल्ड लाफ्टर-डे' के खास मौके पर कॉमेडी और एक्टिंग की दुनिया में अपना मुकाम बनाने की दिशा में अग्रसर जेमी लीवर से हमने लंबी बातचीत की। प्रस्तुत है उस बातचीत के खास अंश-

सुना है आपने अपनी मास्टर डिग्री लंदन से कंप्लीट की है और आप लंदन में जॉब भी कर रही थीं। क्या ये सच है?

आमतौर पर हर परिवार में पैरेंट्स चाहते हैं कि उनके बच्चे पढ़ें-लिखें, अपना करियर बनाएं और खुद के पैरों पर खड़े होकर जीवन को सार्थक बनाएं। बच्चे अगर 'आउट ऑफ द बॉक्स' करियर के बारे में सोचते हैं तो नॉर्मली उन्हें अप्रिसिएट नहीं किया जाता। मार्केटिंग इस दौर का लोकप्रिय करियर ऑप्शन माना जाता है, मैंने इसी सब्जेक्ट में लंदन से मास्टर्स किया और वहीं मुझे नौकरी भी मिल गई थी।

फिर विदेश का करियर छोड़ कर आपने अपने पिता के नक्शे कदम पर कॉमेडी और एक्टिंग को करियर बनाने के बारे में कब और क्यों सोचा?

मैं जब भी अपने डैड को कॉमेडी करते देखती, तो मुझे लगता कि शायद मुझमें भी कॉमेडी स्किल है। तभी से कॉमेडी करने के डिजायर ने मेरे मन में कहीं घर बना लिया था। लंदन में जॉब के दौरान मुझे महसूस होने लगा, मैं इस जॉब में मिसफिट हूं। उस 9 से 5 जॉब में मेरा मन नहीं लग रहा था। मैंने डैडी-मम्मी से फोन पर बात कर अपने दिल की कशमकश बताई। उन्होंने मेरी भावनाओं की कद्र की और मुझे वापस मुंबई बुला लिया। मुंबई आने के बाद इस फील्ड में मेरा स्ट्रगल जीरो से स्टार्ट हुआ।

क्या आपके पिता ने कभी निर्माताओं से आपकी सिफारिश की? स्टैंड अप कॉमेडियन के रूप में कैसे ब्रेक मिला आपको?

नहीं! मेरे डैड कहां जानते थे कि मुझमें कॉमेडी करने का टैलेंट है भी या नहीं? मुझे खुद को प्रूव करना था। न मैंने डैड से यह उम्मीद रखी, न उन्होंने कभी मेरे लिए किसी प्रोड्यूसर से बात की। मेरे डैड ने भी बरसों पहले स्टैंड अप कॉमेडियन का काम एक कंपनी से शुरू किया था। मैं भी छोटे ग्रुप, क्लब हाउसेस में मौका मिलने पर कॉमेडी शोज करती थी। लोगों से अच्छा रिस्पॉन्स मिलता रहा और मेरा हौसला बढ़ता गया। मैं टीवी चैनलों, प्रोडक्शन हाउसेस के लिए ऑडिशन देने लगी। कास्टिंग डायरेक्टर्स को फोन करने लगी। मैंने 'कॉमेडी सर्कस' का ऑडिशन क्रैक किया, इसके बाद टीवी के लिए मुझे काम मिलने लगा। तब डैड को लगा, मुझ में उनकी तरह कॉमेडी सेंस है। एक रोज उन्होंने मुझसे कहा, 'मैं अगले महीने वर्ल्ड टूर पर जा रहा हूं, तुम चाहो तो मुझे इस शो के लिए एक स्टैंड अप कॉमेडियन के रूप में जॉइन कर सकती हो।' फिर मैं वर्ल्ड टूर पर 'जॉनी लीवर शो' के लिए उनके साथ गई।

शॉर्ट फिल्म '2050 केयर विथ लव' के सीन में सुलभा–जेमी

अकसर यह माना जाता है कि कॉमेडी करना, लोगों को हंसाना आसान नहीं होता, इस बारे में आपका क्या कहना है?

हां, यह सच है। कॉमेडी करना, लोगों को हंसाना सबसे मुश्किल टास्क है। टेढ़े-मेढ़े चेहरे बनाना कोई कॉमेडी नहीं होती। कॉमेडी होती है टाइमिंग से, शब्दों के भ्रम और मायाजाल से। अगर आप कॉमेडियन हैं तो आपको कॉमिक टाइमिंग का बहुत ख्याल रखना पड़ेगा, उसके बिना कॉमेडी नहीं हो सकती। मेरे डैड इसमें बेस्ट हैं।

मेरा मानना है कि आम इंसान हो या खास, सभी के लिए हंसना-हंसाना बेहद जरूरी होता है। 'लाफ्टर थेरेपी इज द बेस्ट थेरेपी इन द वर्ल्ड,' यह एक सच्चाई है। किसी ने बिल्कुल सच कहा है कि जिस दिन आप हंसे नहीं, उस दिन आपने अपने जीवन का एक दिन जाया कर दिया।

एक दौर था, जब फिल्मों में टुनटुन, मनोरमा, गुड्डी मारुति जैसी महिला कॉमेडियंस हुआ करती थीं। पिछले कुछ सालों से फिल्मों में उस तरह की कोई भी महिला कॉमेडियन नहीं नजर आती। इसकी क्या वजह मानती हैं आप?

यह रियलिस्टिक फिल्मों का दौर है। इस तरह की फिल्मों में कॉमेडी या गीतों का स्कोप कम ही होता है। फिल्मों से इतर देखा जाए तो इस दौर में भारती सिंह सफल महिला कॉमेडियन के रूप में अपना नाम कर चुकी हैं, अब तो वो कॉमेडी के साथ-साथ शोज भी होस्ट कर रही हैं। मैं इसी बात का शुक्र मानती हूं कि मुझे टीवी, ओटीटी और फिल्मों में कास्ट किया जा रहा है। इससे मैं बहुत खुश हूं।

कुछ समय पहले आपने शॉर्ट फिल्म '2050 केयर विथ लव' की थी। इस फिल्म को करने के पीछे क्या वजह रही?

फिल्म की निर्देशिका लक्ष्मी अय्यर ने जब इस फिल्म के लिए मुझसे संपर्क किया और मेरे किरदार के साथ कहानी का नैरेशन सुनाया तो इसे मना करने का प्रश्न ही नहीं रहा। इसमें मेरा एक सेंसिटिव-सॉफ्ट रोल है, जो मानवीय रिश्तों पर लिखा गया है। मुझे अब तक मिले अधिकांश कॉमेडी किरदारों से यह हटकर था। फिल्म में मेरा किरदार (बेला) एक उम्रदराज महिला (सुलभा आर्य) की सेवा करती है। यह रोल मेरे दिल के बहुत करीब है।

अपने आने वाले प्रोजेक्ट्स के बारे में कुछ बताना चाहेंगी आप?

कपिल शर्मा के साथ फिल्म 'किस-किस को प्यार करूं 2' में मेरा अहम रोल है। इस फिल्म के लिए कपिल शर्मा ने मेरे लिए एक खास किरदार तैयार किया है। इसके अलावा इसी महीने में दो वेब सीरीज आ रही हैं। इस साल डैड के साथ वर्ल्ड टूर पर भी जाना है। *

मैंने अपने पिता से सीखा...

बहुत नम्र, मिलनसार और डाउन टू अर्थ हैं मेरे डैड। यह बात उन्होंने हमेशा सिखाई कि बड़ा निर्माता-निर्देशक हो या फिर स्पॉटबॉय, सभी के साथ एक जैसा नम्रता भरा व्यवहार करना। सफलता की सीढ़ियां चढ़ने में वक्त लगता है, लेकिन उतरते समय देर नहीं लगती। हमारी विनम्रता, मिलनसार स्वभाव ही हमारे काम आता है। पर्दे पर हम जो किरदार निभाते हैं, उसे तो लिखने वाला लेखक होता है, लेकिन वास्तविक जीवन में हमारा व्यवहार हम ही गढ़ते हैं, यह हमारा आईना होता है, यही व्यवहार लोगों के जेहन में हमेशा याद रहता है।